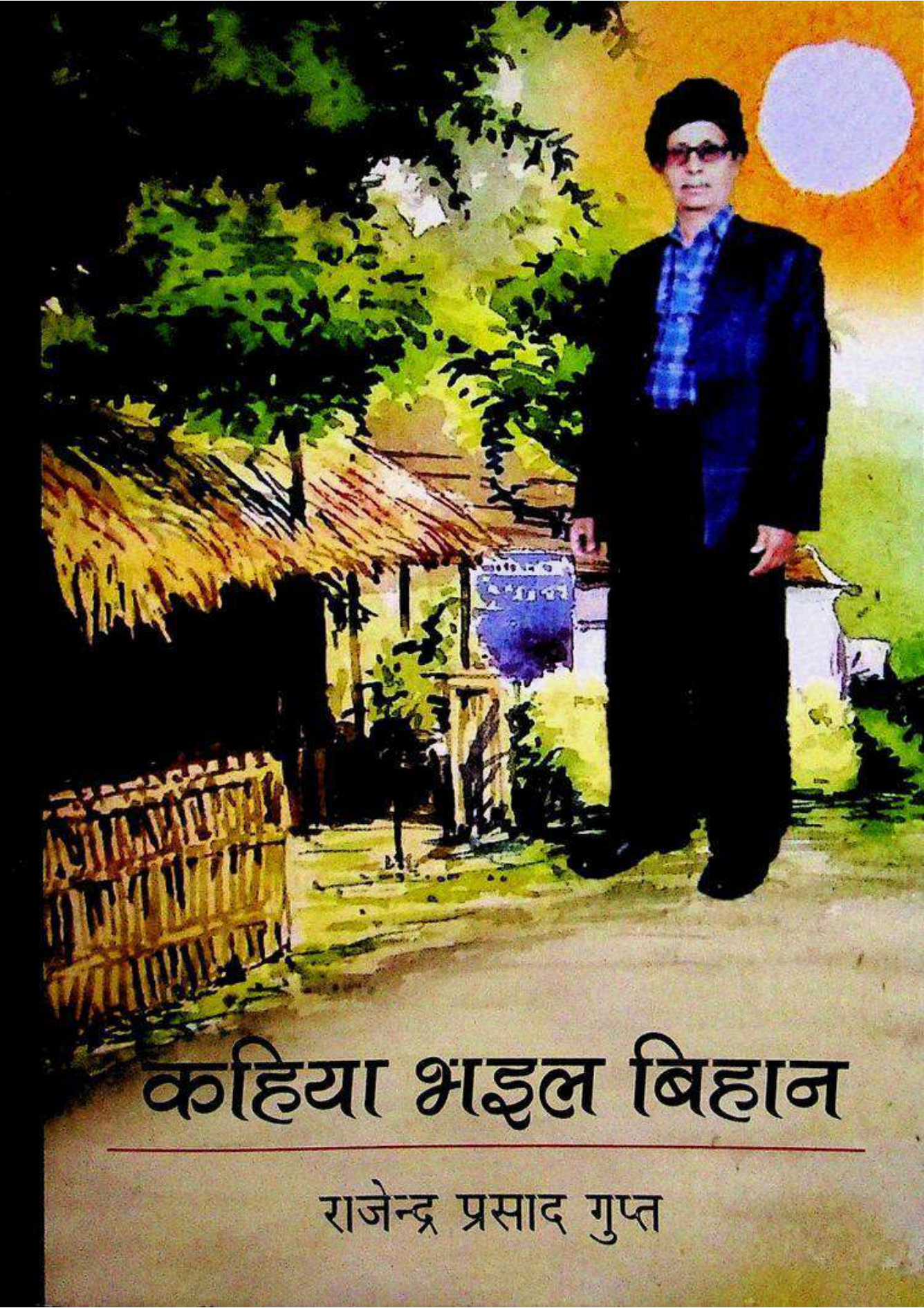

कहिया भइल बिहान

राजेन्द्र प्रसाद गुप्त

www.bhojpurisahityangan.com

कहिया भइल बिहान

(कविता संग्रह)

रचनाकार

राजेन्द्र गुप्त

शिवालिक प्रकाशन
दिल्ली भारत

www.bhojpurisahityangan.com

प्रकाशन	शिवालिक प्रकाशन 4648/21, अंसारी रोड, दरियागंज नई दिल्ली-110002 फोन : 011-42351161 ईमेल : shivalikprakashan@yahoo.com
ISBN	978-81-938263-9-3
सहयोग राशि	295 रुपया ।
सर्वाधिकार	कवि
प्रकाशन के वर्ष	जनवरी 2020 ई० ।
अक्षर संयोजक	अखिलेश कुमार यादव, संजय कम्प्यूटर, मशरक, सारण (बिहार)

Kahiya Bhail Bihan

A Great Selection of Bhojpuri Kavita

Poet ***Rajendragupt***

©

www.bhojpurisahityangan.com

दोह

क्रम	विषय	पृष्ट संख्या
1.	समर्पण	- 6
2.	भूमिका	- 7–8
3.	दू टूम	- 9–12
4.	सुरसती वंदना	- 13–14
5.	राम मे जगत जगत में राम	- 15
6.	चारो धाम	- 16–17
7.	ईश्वर के हऽ	- 18–19
8.	निज धाम	- 20
9.	ज्ञान अँजोर	- 21–22
10.	कर्म	- 23
11.	खुदा ईश ह एके जान	- 24–25
12.	ओही नगरिया	- 26
13.	गीत ह जिन्दगी	- 27–28
14.	प्रेम-1	- 29–30
15.	बड़का दानी	- 31
16.	संविधान	- 32
17.	भूलीं मत अतीत	- 33–34
18.	समय बित जाई	- 35
19.	आश्रय दीं	- 36
20.	अनुभव	- 37–38
21.	जोगा लऽ	- 39
22.	जिनगी थोड़	- 40
23.	भावना	- 41
24.	कदम से कदम	- 42
25.	बेड़ा पार लगा लऽ	- 43
26.	नापऽ मत एके तराजू	- 44–45

www.bhojpurisahityangan.com

टोह

क्रम	विषय	पृष्ट संख्या
27.	जल्दी थाईं	– 46–47
28.	अपूर्णता के छोड़	– 48
29.	कन्यादान	– 49–50
30.	का से का गइल	– 51
31.	मदद दुखी के	– 52
32.	महापाप	– 53
33.	सुझाव	– 54
34.	माई बनऽ	– 55–56
35.	उल्टा चोर कोतवाल के डाँटे	– 57
36.	झपास	– 58
37.	गोरखधंधा	– 59
38.	प्रेम-2	– 60–61
39.	लाज शरम	– 62
40.	आपन के	– 63–64
41	समय	– 65–66
42.	अरथी पर होईं विदाई	– 67–68
43.	सफलता	– 69
44.	जज्बा	– 70–71
45.	लखनवी नवाब	– 72–73
46.	शब्द चयन	– 74–75
47.	मेहरी	– 76–77
48.	नारी	– 78–79
49.	भल बा	– 80
50.	महाविनाश	– 81–82
51.	बेशक दउड़ऽ ख्वाब के पाछे	– 83
52.	राहत	– 84

www.bhojpurisahityangan.com

दोह

क्रम	विषय	पृष्ट संख्या
53.	लोग	- 85
54.	जौहर	- 86
55.	सोंच के चलऽ	- 87–88
56.	दहेज रूपी कोढ़	- 89–92
57.	लगाई लेतीं छतियाँ	- 93–98
58.	मनभावन सावन	- 99
59.	कहवाँ गइलन-1	- 100
60.	बाजार	- 101
61.	देखते-देखते	- 102–103
62.	बुरा हो जाई	- 104–105
63.	अगुआ फरार	- 106
64.	हाय-हाय	- 107–108
65.	बदनाम	- 109–110
66.	भागऽ मत	- 111
67.	फरमान	- 112
68.	खूबसूरत संज्ञा	- 113
69.	कहवाँ गइलन-2	- 114–116
70.	हऽ ई देश महान्	- 117–118
71.	विमर्श	- 119–127
72.	कवि परिचय	- 128

www.bhojpurisahityangan.com

अपना बाबू जी परम आदरणीय साधुशरण प्रसाद गुप्त जी (स्मृतिशेष) आ पूज्यनीया माई लाखपति देवी जी के पावन चरणन में हम अपना एह रचना संसार 'कहिया भइल बिहान' समर्पित करत अपना अर्द्धांगिनी (स्मृतिशेष) श्रीमती देवी जी के इयाद करत भाव भरल स्नेहाभाव व्यक्त करत बानीं।

www.bhojpurisahityangan.com

भूमिका

– डॉ० जौहर शफियाबादी

भोजपुरी भाषा आ साहित्य के अँचरा में बहुत सारा अनुभूतिपरक नगीना गाँव-गँवई का मनई का विचार से जड़ाइल बा, जवन भोजपुरी के धरोहर बा।

राजा भरथरी का अनुसार वैचारिक ऊर्जा के व्यग्र किरण कवि-हृदय से निकल-निकल के संसार आ पाठक का हृदय में जीवन ज्योति जगावे में सफल सिद्ध होला, बाकि कवि के विवेकपूर्ण चेतना पाठक आ श्रोता का सोझा आवे खातिर जल बिन मीन के दशा में रहेला आ इहे साँच कवनो साहित्य सृजना के कारण बनेला आ जे तरे प्रेम होखे के कवनो कारण ना होला इहे कारण बा कि प्रेम अकारणे होला। ठीक वेदना आ संवेदना जब नैतिकता का खरात पर चढ़ के चसक होला तब काव्य-ऊर्जा में बदल के वैचारिक ऊर्जा के अमिट सोना बन जाला, जवना के निर्धारित काव्यकायिक स्वरूपन का कसौटी पर व्याकरणीय चौकसी का साथ परखल जानल जाला। ठीक एही स्थान से काव्य कौशल के कवनो भाषा में श्री गणेश मानल जाला।

भोजपुरी हिन्दी के जानल मानल कवि साहित्यकार शिक्षक श्री राजेन्द्रगुप्त जी द्वारा विरचित कविता संग्रह 'कहिया भइल बिहान' एगो प्रगतिशील सोंच आ नैसर्गिक ऊर्जा पर आधारित अनुभूतिपरक साहित्य सृजना के कौशल से भरल पूरल साहित्य बा, जवना में विभिन्न समसामयिक आ ठमकल अभाज्य अकाट्य साँच के सुरूज चान निकल रहल बा, जवना के प्रकाश से निश्चित रूप से समाज के लाभ आ भोजपुरी भाषा साहित्य के उत्थान के पताका फहराई।

www.bhojpurisahityangan.com

आज के बाजारबादी फूहड़ अश्लील गीत-गवनई का बाजार में वैचारिक ऊर्जा के ई धरोहर निश्चित रूप से सराहे योग्य बा। यशस्वी कवि श्री राजेन्द्रगुप्त जी के हम एह काव्य कर्म खातिर कोटिशः बधाई का साथ जय भोजपुरी कहत बानीं।

t

पूर्व महामंत्री
अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन आ
वर्तमान राष्ट्रीय उपाध्यक्ष सिनेटर जामिया मिलिया इसलामिया
अंतर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

www.bhojpurisahityangan.com

दू टूम

आपन बात कहे के नेग-जोग का पहिले हम एगो बात कहे के चाहत बानीं कि गीत, संगीत कविताई भा कवनो कला केहू के धरोहर ना ह, ई एगो नैसर्गिक गुण ह, जवन हर मनई के भीतर छिपल बा। जे एकनी के पीछे लागल, रूचि के साथ अभ्यास कइलख ओमे निपुण भइल। ई क्षमता हर मनई में मौजूद बा। कवनो बीज के देखीं। आम के बीज भा आँठी के भीतर लमहर से लमहर गाछ छिपल बा। ओकरा के यदि घाम में रख देहल जाव, त ऊ कुछ दिनन के बाद सूख जाले। अचेतन हो जाले। बढ़ ना पावेले, बाकि जब ऊ माटी, पानी, हवा, प्रकाश के लगाव में आवेले त गंवे-गंवे लमहर से लमहर गाछ में बदल जाले।

पहिले हम भोजपुरी भाषा के हीन नजर से देखत रहनीं। एकर एगो कारण बा भोजपुरी में फूहड़ गीत-गवनई। हमार हिन्दी से लगाव। एह से हम हिन्दी में लिखत रहनीं 'आनन्द ला'।

भोजपुरी भाषा के ओर झुकाव दू गो कारणन से भइल। पहिला कारण बाड़न कवि 'शुभ जी'। एक दिन शुभ जी कहलन भाई! तनी घरे अइह, हम आपन कविता सुनाइब। हम चकित हो गइनीं। मनवा में कहनीं, कविता! शुभ नारायण के। ई कब से कवि हो गइलन। ई का लिखत होइहन, मजाक नु करत होइहन, ई त बचपन से मजकिया मिजाज के मनई रहस। काहे कि दसवीं कक्षा तक इनकर साहित्य के ओर झुकाव ना रहे। तब भीतर से आवाज आइल, जइसे बीज से पौधा भा गाछ परिवेश पा के विकसित हो जाला। केहू भी इन्सान कुछ बन सकत बा, अंग्रेजी में कहल गइल बा- A man can do every things if he wants.

www.bhojpurisahityangan.com

भाई 'शुभ जी' एक दिन खुद हमरा घरे पहुँचलन। आपन लिखल 'राग-अनुराग' भेंट कइलन। उनकरा गइला के बाद 'राग-अनुराग' बड़ा ध्यान से पढ़नीं। हम चकित हो गइनीं। 'शुभ जी' के प्रति श्रद्धा के भाव जागल। मन में हुलास भइल। हम भाई के साहस बढ़ावते आपन सोंच पर लज्जित होके क्षमा याचना कइनीं। भाई खाली मुस्कुरइलन।

एक दिन 'शुभ जी' के संगे जौहर जी के पास जाए के मौका मिलल। गइनीं, बइठनीं बतकही के क्रम में शुभ जी जौहर जी से कहलन, "इहो कविता लिखेलन बाकि हिन्दी में" जौहर जी कहलन, "अब के समय में भोजपुरी में लिखल नीमन रही। अपना मातृभाषा के कर्ज चुकावे के चाहीं। एह से हम रवाँ से कहत बानीं, काहे कि एकर क्षेत्र अबहुँओ खाली बा।" थोड़े देर बाद हम दूनो भाई घरे अइनी जा। शाम के शुभ जी ओही दिन हमरा घरे अइलन आ कहलन जौहर जी के पास चले के गइनीं। आइल-गइल बंद ना भइल। एक दिन हम जौहर जी के भोज-निमंत्रण पर बोलइनीं। बइठकी भइल, चाय-पानी भइल, एह बीच में जौहर जी कविता सुनावे के कहनीं हम आपन हिन्दी में लिखल कविता सुनवनीं-गवनीं। उहाँ के अच्छा लागल कि ना लागल हमरा एकर आभास ना भइल। खाना-पीना भइल, गोष्ठी समाप्त भइल सभे घरे गइल।

एक दिन 'शुभ जी' शाम के अइलन आ कहलन, "जौहर जी तोहर बड़ाई करत रहनीं। तोहर कविता उहाँ के अच्छा लागल। सुन के मन गदगदाइल एह से कि ई बात भोजपुरी के मर्मज्ञ विद्वान अउर साहित्यकार के विचार रहे। विश्वास बढ़ल, बाकि हिम्मत ना करे कि भोजपुरी में लिखीं।"

www.bhojpurisahityangan.com

एक दिन हम आपन हिन्दी में लिखल कविता "जीवन के राग" पढ़त रहनीं। हम लिखले रहनीं कि-

उत्कर्ष - अपकर्ष के मध्य ही तो,
नव जीवन की लहरें उठतीं-गिरतीं ।
अडिग रहा अपने पथ पर जो,
उसे ही तो सफलता मिलती ।।

दोसर कविता "कर्मपथ" से मिलल-

रूको नहीं आगे बढ़ो साहस बटोरकर,
प्रबल बेग धार से धारा को पार कर ।
टेढ़े-मेढ़े रास्ते हैं चलना संभल कर,
जीवन की बाजी मारी जो चला चलकर ।

बस कलम उठइनीं। लिखे के शुरूआत कइनीं, जवन अपने सभन के आगे बा.....

आगे श्री अवध उच्च विद्यालय चैनपुर, मशरक, सारण के संस्कृत के शिक्षक श्री विमलेश झा 'विमल' के हम एहसानमंद बानी आ उहाँ के कोटि-कोटि धन्यवाद देत बानीं जे हमरा से कहनीं "देखीं गुप्त जी अभ्यासी भा प्रयासरते व्यक्ति एक दिन सफलता के लमहर से लमहर चोटी पर पहुँचेला। रवाँ लिखत चलीं कलम रोकीं मत। जवन लिखत बानीं तवन ठीक बा। असली बात भावना ह, अंलकारिक भाषा लिखे के केहू विद्वान कवि कहाला जेकर कविता समझे खातिर शब्दकोष उलटे के पड़े, ऊ कवि ना ह, आज दुनिया जेतना सूर तुलसी कबीर के पूजत बा, आम जनता पढ़ के समझ जाता जे कवि आम बोली में आम जनता ला लिखे उहे कवि ह, डरीं मत जवन लइका लड़िकाई में टेढ़ा

www.bhojpurisahityangan.com

'क' लिखे ला आगे चल के सुन्दर गोल लिखे लागेला। कवनो कला अभ्यास से आवेला। अइसन कह के 'विमल' जी हमरा अन्दर असीम ऊर्जा भरनीं।

आगे भाई डॉ० प्रभात आ विनोद जी के हम धन्यवाद प्रकट करत बानीं, जे हमेशा से प्रोत्साहन देत आइल बा लोग।

अंत में भोजपुरी भाषा के गजलकार मर्मज्ञ विद्वान् भाई जौहर शफियाबादी के आभारी बानीं आ भीतर से आपन उद्‌गार प्रकट करत बानीं, जे हमरा के एह मुकाम पर पहुँचवनीं। उहाँ के बारे में एक बार अउर उद्‌गार प्रकट करत कहब कि–

एक दिन जौहर चल जइहन,
पर हर दिल में उनकर दिल रही ।
महान् रही उनकर रचना,
शायरन के दुनिया में भी एक,
जौहर के भी नाम रही,
अलग उनकर पहिचान रही ।

t

जय भोजपुरी
राजेन्द्रगुप्त

www.bhojpurisahityangan.com

सुरसती वन्दना

वर दे दीं सुरसती माई,
वर दे दीं भरपूर ।
अज्ञान अन्हरिया भर गइल,
एकरा के कर दीं दूर ।
ज्ञान के नया अब जोत जगा दीं,
अज्ञान-अन्हार भगा दीं ।
वर दे के अब हर मानव का,
भीतर जोत जगा दीं ।
धरम-करम सब मेट गइल बा,
फेर ओकरा के सजा दीं ।
एकरा खातिर फेर गिरिधर के,
धरती पर बोलवा दीं ।
देखावा में बा लोग लागल,
सुने बात ना भीतर के ।
अन्दर में अब जोत जगा दीं,
दीप जला के भीतर के ।
नया गीत दीं नया राग दीं,
नया उमंग अब भर दीं ।

www.bhojpurisahityangan.com

नया ताल नया उमंग के,
रंग हियरा में भर दीं ।
'गुप्त' दुनिया के प्रेम जोत से,
लबालब खूब भर दीं ।
बेईमानी दूर करा के,
ईमान भरीं भरपूर ।
वर दे दीं सुरसती माई,
वर दे दीं भरपूर ।
अज्ञान अन्हरिया भर गइल,
एकरा के कर दीं दूर ।

www.bhojpurisahityangan.com

राम में जगत जगत में राम

सब में रमे से राम कहलावे,
रहम करे रहमान ।
करम करे में योग सिखलावे,
उहे कृष्ण महान् ।
रहम-करम एक होई जहिया,
प्रेम-जगत खिली तहिया ।
राम में जगत-जगत में राम,
हरदम लउकत रही तहिया ।
करमे ईश के रूप भेंटाई,
दीन-दुखी के सेवा भाई ।
सब कुछ छोड़ सेवा कर पाई,
हरदम नीमन काम सोहाई ।
हरदम काम नीमन तू कर,
बेरहमी छोड़ हिया में धर ।
दिल से दिल के खूब मिलाव,
फरेबी काम कबो मत कर ।
वेद-पुराण इहे बतलावे,
गीता-कुरान हुकुम फरमावे ।
नेक रहिया जे गोर बढ़ावे,
गुप्त उहे नर सार के पावे ।

www.bhojpurisahityangan.com

चारो धाम

का लेके अइलऽ जग में,
का लेके अब जइबऽ ।
मुट्ठी बाँध के आइल बाड़ऽ,
हाथ पसार के जइबऽ ।
निशि दिन तू कुकरम करेलऽ,
खोजले लऽ मुक्ति-द्वार ।
जवन रहिया चलत तू बाड़ऽ,
खुलल नरक के बा धार ।
बेईमानी तू करत रहेलऽ,
जालऽ शनीचर धाम ।
बूझऽ ना पूजा से नीमन,
दीनन का सेवा के काम ।
कतनो तू तीरथ में जइब,
चाहे चारो धाम ।
भीतर शान्ति कबो ना पइबऽ,
हो जइब बदनाम ।
मुक्ति के त बात अलग बा,
चित शान्ति ना पाई ।

www.bhojpurisahityangan.com

चाहे कतनो दिन-रात तू,
माला जप ल भाई ।
खड़ा तू बाड़ऽ मुक्ति द्वार पर,
कर लऽ नीक अबहूँ से काम ।
'गुप्त' अगर ईमान बनवलऽ,
घर ही में चारो धाम ।
बेईमानी से धन अंइठ के,
पूजा खूब करवावेलऽ ।
पूजा कर के सब लोग के,
नीके नू भरमावेल ।

t

www.bhojpurisahityangan.com

ईश्वर के ह

ईश्वर के ह ? करूणा के भाव,
ईश्वर के ह ? सेवा के भाव ।
सब चेतना के बहत झरना,
सब जीवन न के समान तरना ।

ईश्वर के ह ? जगत संचालक,
सब जीवन के समान पालक ।
जड़ आ चेतन सब में फइलल,
उहे शक्ति हमनी में भरल ।

ताल-तलइया में बहत ईश्वर,
सबके भीतर बइठल ईश्वर ।
नक्षत्र-ग्रह का आधार ईश्वर,
पंछियन के शोर में गूँजत ईश्वर ।

www.bhojpurisahityangan.com

फूलन में खुशबु कलि मुस्कान,
ज्ञानी जन में बेहतर ज्ञान ।
योगी जन में बेहतर ध्यान,
सेवा में रत भाई समान ।

ना देवालय ना मस्जिद में,
बा दुखियन के हिया में वास ।
मानऽ बतिया तू सुन ल 'गुप्त',
कण-कण में ऊ करे निवास ।

www.bhojpurisahityangan.com

निज धाम

प्रेम से भरल बा हिया जहवाँ,
उहवाँ सुख-शान्ति के फूल खिलल ।
घृणा-कलह बा रात-दिन जहवाँ,
उहवाँ दुख के संसार मिलल ।

डूबल बा मन ईश में जहवाँ,
उहाँ दया-करूणा के भाव मिलल ।
हरदम दानवी मन बा जहवाँ,
उहवाँ विनाश के कगार मिलल ।

बद जगत से सत जगत् में आके,
गुप्त हरदम नीमन काम करऽ ।
के बा आपन के बा पराया,
सभ के सेवा करत जग पार कर ।

t

www.bhojpurisahityangan.com

ज्ञान - अँजोर

जेकरा ला तू चोरी करब,
उहे कही चोर ।
जनम-जनम कुहुकत रहब,
दिन-रात भा भोर ।
दोसरा के गर धन दे देब,
एगो के रोअइब ।
ओकर का तू ले लेब,
ईमान गंवा के जइब ।
अबहूँ से तू सुन बाबू,
कहल बतिया मोर ।
काहे ला ईमान गंवइब,
जिनगी बा ई थोर ।
नीमन संग जे बाउर कइलख,
खुद के कहे बेजोड़ ।
जनमे से सब देखे के मिलल,
जवन रहनिया तोर ।
हित-मीत सबही से कहे,
सुन रहनिया मोर ।

www.bhojpurisahityangan.com

केतनो तहनी कहब कुछुओ,
हम हईं थुथुन जोर ।
बतिया त सब सांचे बाटे,
हियरा कहे मोर ।
बाकी अब सकारीं कइसे,
मन में बसल चोर ।
'गुप्त' कहे सुन मोर बाबू,
कहल बचनिया मोर ।
गुरू-विवेका राम कृष्ण से,
ले ल ज्ञान अँजोर ।

www.bhojpurisahityangan.com

कर्म

ते हवे छोट जाति हम हई बड़,
कहत एक अपर से झगड़त देखनीं ।
आइल-गइल राही जे जे उहवाँ,
ओकरा के उहाँ से खिसकत देखनी ।
गिरल रहे राह में एगो थैला,
लेहे ला ओह के लपकत देखनीं ।
छीना-झपटी में फाटल थैला,
खून से सनल कपड़ा देखनीं ।
रहे लहू-लुहान अंखिया सूजल,
दूनो के बइठल हॉफत देखनीं ।
सुनले रहे बतिया जे जे उहवाँ,
सभ के ओकनी के नीच कहत सुननीं ।
'गुप्त' जानऽ करमे छोट करमे बड़,
लोगन के समझावत देखनीं ।
करमे भइलन रविदास बड़ जान,
प्रेम से भइली बड़ सउरी जान ।
बड़ भा छोट के मापं ह करम,
एह से सोंच-समझ करऽ करम ।
लोगन के सुन के बतिया दूनो,
करतऽ करम हम नीचा देखनीं ।

t

www.bhojpurisahityangan.com

खुदा ईश ह एके जान

जब तक रही मनुवादी सोंच,
जिन्दगी ना बदली छोटका के ।
बड़का हरदम सतावत रही,
ऊ काम बिगाड़ी छोटका के ।
कबो ना बनो छोटका शासक,
कबो ना पहुँचे उच्च पद पर ।
बाधा डाली जान से मारी,
आँख दिखाई अवसर पर ।
छोटका होके रोब देखाई,
बात ना सोहाई हमनी के ।
आफिस जाके सामने बइठी,
कदर ना करी हमनी के ।
एही सोंच से मारल गइलन,
वीर दारोगा श्री मिथिलेश ।
ऊ गइलन शहीद भइलन,
अब लड़ ल जिनगी भर केश ।
राम त तोहरा से बड़का,
सीता के देलन वनवास ।
ह क्षमा समरथी के नाज,
ना कइलन धोबी के हरास ।
सबमें रमे से राम कहावे,
चाहे कहाए ऊ भगवान ।

www.bhojpurisahityangan.com

नेक करम तू कर ल भाई,
खुदा, ईश सब एके जान ।
ना बा केहू छोटा-बड़ा,
हर दिल में बा उहे खड़ा ।
झाँक के देखऽ तनी अन्दर,
राम रमत बा तोहरा अन्दर ।
छोड़ऽ तू मनुवादी सोंच,
करऽ काम तू राम समान ।
छोड़ऽ मारल काटल भाई,
मारऽ मत केहू के जान ।
काम करऽ तू अइसन हरदम,
कर जोड़ करे सभे परनाम ।
चाहे होखे छोटका-बड़का,
कदर करऽ तू एक समान ।
पूँजीवाद के बात बनावल,
मन से अब भुला जा तू ।
'गुप्त' कहे सुनऽ भाई बुद्धु,
सबका के अपना ल तू ।

www.bhojpurisahityangan.com

ओही नगरिया

चल रे मन छोड़ ओही नगरिया,
जहवाँ परेम धुन बाजत होखे ।
दुनिया से दूर कोइलिया जहवाँ,
अनहद प्रेम-गीत गावत होखे ।

कोलाहल से दूर निहायत दूर,
जहाँ अमन के बंशी बाजत होखे ।
चल रे मन छोड़ ओही डगरिया,
जहवाँ से सजन गुजरत होखे ।

जहाँ ना लउके पापी लोगवा,
हर जगह भल मानुष दीखे ।
चल रे मन छोड़ ओही नगरिया,
जहवाँ प्रेम-फूल खिलत होखे ।

सबसे मिलते-जुलते, गले लगाते,
जहाँ ईश-भगत मिल जाला ।
चल रे मन छोड़ ओही नगरिया,
जहाँ राम-खुदा में मन बस जाला ।

www.bhojpurisahityangan.com

गीत ह जिन्दगी

गीत ह जिन्दगी,
तनी गुनगुनाईं ।
जिनगी संघर्ष ह,
संघर्षे में जाईं ।
सबक बा कुछ लोग,
राउर जिनगी के ।
कुछ लोग अइसन बा,
देला आशीष के ।
करत बारऽ जवन काम,
प्रेम से तू कर ।
जवन काम करत बारऽ,
सधला पर छोड़ ।
मत कर अब-तब,
अब ही से लागऽ ।
कल कल चल गइल,
अब ही जागऽ ।

www.bhojpurisahityangan.com

छोड़ के निराश के,
संगे आश ले के ।
हिम्मत जुटा के,
लेके बढ़ हर के ।
बन के नरम सदा,
चल तू जहान में ।
गम भा निन्दा में,
रह तू समान में ।
गुप्त से विनती बा,
ई गीत गुनगुनाव ।
सबके साथ ले के,
ई गीत तू गावऽ ।

www.bhojpurisahityangan.com

प्रेम

धरम करम के बतिया छोड़,
करऽ ना प्रेम के बतिया तू ।
प्रेम हऽ जिन्दगी के सार,
असली बतिया जानऽ तू ।

कृष्ण-प्रेम में पागल मीरा,
भइली दिवानी मोहन के ।
तइसे जूठा बेर खा के,
तरलन राघव सउरी के ।

तीरथ ना गइली कबो सवरी,
चरचा ना कवनो धाम के ।
प्रेम से आपन हिया में रखली,
दशरथ सुत राघवेन्द्र के ।

दुर्योधन के भोज ठुकरवलन,
प्रेम में साग बिदुर-घर खइलन ।
प्रेम एहसास ई दिखला के,
पूरा जग के प्रेम सिखवलन ।

www.bhojpurisahityangan.com

पोथी पतरा पढ़ला से कबो,
ना होखे दर्शन ईश्वर के ।
जे-जे कइलख प्रेम प्राणि से,
उहे दर्शन कइलख ईश्वर के ।

राम-रहीम ना मंदिर-मस्जिद,
ना ऊ काबा कैलाश में ।
कण-कण में ऊ व्याप्त बारन,
बसल बारन ऊ हर सांस में ।

मंदिर-मस्जिद के छोड़ऽ लफरा,
करऽ हरदम जीवन से प्रेम ।
गुप्त साँच बा इहे बतिया,
करत रहऽ सभका से प्रेम ।

धूप धुना के छोड़ऽ खेल,
हियरा में अब रख मेल ।
साँच जिनगी के इहे भाई,
खुल रहल जिन्दगी के रेल ।

www.bhojpurisahityangan.com

बड़का दानी

मनई में बड़का दानी ह ऊ,
जे भटकल के नया रोशनी दे ।
धन पद आ मान से कहीं ऊ,
जे नेह आ दया के वाणी दे ।
जेकर खाली बा ज्ञान से हिया,
ओकरा के उत्तिम ज्ञान-रस दे ।
सच्चाई से दूर भइल जे,
ओकरो में आपन जोति भर दे ।
छोड़े के चाहत बा जेकरा,
विकार आ अवगुण के निज तन से ।
ओकरा के शुभ अवसर दे दीं ।
मोड़ ली अपना मन के ।
ज्ञानी-दानी उहे ह नीमन,
जे ज्ञान के जोत फइला दे ।
लक्ष्य से भटकल मनई के,
सही दिशा बतला दे ।
विवेकानन्द आ मोहम्मद जइसन,
भइल ना दोसर दानी ।
अइसन काम में भइल समरथ जे,
उहे कहाइल बड़का दानी ।

www.bhojpurisahityangan.com

संविधान

मानवता से लमहर कवनो,
ना बा संविधान ।
पशुता छोड़ मानव बनऽ,
ईश्वर के विधान ।
मंदिर-मस्जिद का चक्कर में,
झगड़ा खूब लगावेला ।
जीयत मंदिर ढाहत फिरऽ,
लोगवा के भरमावेला ।
संविधान बचावे खातिर,
नारा खाली लगावेला ।
मानवता भुला के अब ऊ,
मानव मंदिर ढिमलावेला ।
जात-पाँत के नारा देके,
लोग के खूब भरमावेला ।
ईश्वर के विधान भुला के,
संविधान बचावे आवेला ।
संविधान तू का बचइब,
पाठ पढ मानवता के ।
बहुत दिन से देखत बानीं,
काम कइल दानवता के ।
अबहूँ से तू चेत भाई,
मन के आपन कर सफाई ।
गुप्त मनवा जब साफ हो जाई,
मानवता के राह मिल जाई ।

www.bhojpurisahityangan.com

भूलीं मत अतीत

भूलीं मत अतीत कबो,
रहीं संग अब के ।
दूनों का बीचे से,
निकालीं राह अबके ।
अतीत के जे जीत गइल,
अब ओकर मीत भइल ।
अबे के अपनाई ना त,
बूझीं तब मेंट गइल ।
पाँव गाड़ी बन गइल,
विकास राह खुल गइल ।
कतनो दूरी रहे ऊ,
नियरा पहुँच गइल ।
कार्ड डी० वॉन के महिमा ई,
सुन ले रे भाई ।
जग के जे दे देलन,
पाँव गाड़ी बनाई ।

www.bhojpurisahityangan.com

पाँव गाड़ी में मोटर देखी,
एडवर्ड लगवलें ।
साइकिल से आगे चल के,
रहिया देखवलें ।
संख्या के सिद्धान्त से,
गणित आसान भइल ।
श्रीरामानुजम के,
दुनिया में नाम भइल ।
मोबाइल के अइला से,
दुनिया में शोर भइल ।
पलभर में सगरो के,
सब खबरिया मिल गइल ।

t

www.bhojpurisahityangan.com

समय बीत जाई

काहे ला करेल तू,
हरदम बाउर कामवा ।
करऽ ना नीमन काम,
जग में होई नामवा ।
भाग्य के छोड़ऽ अब,
करम के जगाव ।
छोड़ी द लाज शरम,
देहिया डोलाव ।
देहिया डोलवलक जे,
उहे सब कुछ पवलक ।
नींदे में वितवलक,
ऊ सबकुछ गँववलक ।
बिन-बिन फेंकल चीजऽ,
चुनलक कबड़िया ।
देखत-देखत एक दिन,
बनल कारबड़िया ।
भरल बा उदाहरण कई,
देखऽ चारो ओरिया ।
छोट-छोट कामवाँ से,
बनल लाखहजरिया ।
गुप्त के बात मानऽ,
काम कर भइया ।
देखत-देखत तोहर,
बीत जाई समइया ।

www.bhojpurisahityangan.com

आश्रय दीं

सच्चाई, शिव सुन्दर जहवाँ,
अहमियत अब दिहीं उहवाँ ।
धरम-करम सच्चाई के,
धारण कर रहीं अब इहवाँ ।

चले जे नीमन रहिया हरदम,
ओकर इज्जत कइल करीं ।
देशभक्ति में जान गँवइलक,
हरदम हिया से नमन करीं ।

गरीब बेबस लाचार जे मिले,
अन्न-धन दिहीं ओकरा के ।
बाउर छोड़ नीमन के पकड़ीं,
हरदम आश्रय दी ओकरा के ।

अब जिनगी जे बाँध गइल,
नीमन बना लीं ओकरा के ।
'गुप्त' कहे हरदम बतिया,
गँवाईं मत अब ओकरा के ।

www.bhojpurisahityangan.com

अनुभव

समझ हकीकी जिनगी के,
दिन-रात अनुभव से होला ।
बात मानीं भा मत मानीं,
आकलन अनुभव से होला ।
जिनगी जखीरा ह अनुभव के,
अनुभव से सबकुछ होई ।
चलेम अन्जाने गर रहिया,
मंजिल कहवाँ भेंटाई ।
के हईं हमनी के भाई,
कहवाँ से हमनी अइनीं ?
लक्ष्य का बा जिनगी के,
आ काहे देहिया पवनीं ।
महसूस करबऽ जेतना भाई,
अँखियाँ ओतने जल्दी खुली ।
अन्तर में देखब जेतना,
ओतने जल्दी अखिया खुली
भीतर में बा असीम क्षमता,
बाहर कबो ना मिली ।
जे पइब अन्तर में पइब,
तबे तोहर हियरा खिली ।
पहचान करब जेतना तू,
पहचान ओतने अधिक होई ।
बौद्धिक व्याख्या नइखे एकर,
अन्तर के गहराई से होई ।

www.bhojpurisahityangan.com

क्षमता सूतल अपार बा,
जे हमनी के अन्दर ।
अन्दर में अन्दर के जगा के,
अन्दर में पालऽ तू अन्दर ।
वंचित नइखे केहू मनई,
ओह शक्ति के स्पर्श से ।
सब में एके समाइल बा,
ओह के खोजऽ हर्ष से ।
दिन-रात के अभ्यास से,
ऊ शक्ति जब सामने आई ।
देखते-देखते हिया के,
अनमोल किवाड़ खुल जाई ।
बा कांटवाँ से भरल-पड़ल,
हमनीं के अन्दर के रहिया ।
ध्यान लगा के चलल जे ओमे,
उहे पवलख अन्दर के रहिया ।
मिले ना कबो तर्क-वितर्क से,
मिले गहराई में डूबला से ।
पावे के बा त अन्दर डूबऽ,
ना होई कुछ कहला से ।

t

www.bhojpurisahityangan.com

जोगा लऽ

ख्याली पोलाव के मत रख हण्डा,
कबो आश के चूल्हा पर ।
ई ना कबो पूरा होई,
झूलत रहब झूला पर ।
ना मनबऽ इतिहास उलट ल,
के पवले बा कल्पना से ।
मेहनत के फल मधुर होला,
कबो ना होला सपना से ।
संत सभे बा कह गइल,
करम कर तू अपना से,
कबो मनोबल छोटा मत रख,
हर काम करऽ तू अपना से ।
नीयत ठीक रख कर ल तू,
दुनिया में हर नीमन ।
ना त ई दुनिया ना छोड़ी,
अनेरे हो जइब बदनाम ।
अच्छा करम गर तू करबऽ,
तोहर जय-जय हो जाई ।
यदि अनैतिक करम तू कइलऽ,
छय तोहर निश्चित हो जाई ।
गुप्त कहे करऽ नीक करम से,
आनन्द के फसल उगाल ।
नीक करम के नीके फलवा,
अपना ला खुद जोगा लऽ ।

www.bhojpurisahityangan.com

जिनगी थोड़

दुनिया से का ले के जइब,
कि मरत बार दौलत ला ।
नेकी-बदी संगे जाई,
का ले जइब उहवाँ ला ।

एह जगत से ले ल दे लऽ का,
कर ल मन में सोच - विचार ।
पाछे रो-रो के पछतइब,
सार छुटी जाई असार ।

नीमन काम अबहूँ से कर,
मानऽ गुप्त बतिया मोर ।
अब बना ल सुन्नर जिन्दगी,
रह गइल बा जिनगी थोड़ ।

t

www.bhojpurisahityangan.com

भावना

मोल नइखे एहसास के जहवाँ,
उहवाँ एहसास के जलत देखनीं ।
नइखे कीमत रिश्ता के जहवाँ,
उहवाँ रिश्ता के टूटत देखनीं ।
कीमत नइखे प्रेम के जहवाँ,
उहवाँ नफरत के हँसत देखनीं ।
नइखे कीमत ममता के जहवाँ,
कसाई बनत पिता के देखनीं ।
कीमत नइखे जहवाँ करूणा के,
उहवाँ करूणा के रोवत देखनीं ।
नइखे कीमत करम के जहवाँ,
भाग्य के उहवाँ हारत देखनीं ।
नइखे सहयोग के भावना जहवाँ,
उहवाँ एक अपर के कटत देखनीं ।
नइखे मिलाप के भावना जहवाँ,
उहवाँ भीषण हम कटुता देखनीं ।
जइसे जइसे बनल पूरब-पश्चिम से,
पूरब सभ्यता के डूबत देखनीं ।
अब 'गुप्त' का कहस तोहरा से,
मेहर-भतार के गिरल देखनीं ।

t

www.bhojpurisahityangan.com

कदम से कदम

कदम से कदम ना मिला के चलीं,
गीत जिनगी के अब गुनगुना के चलीं,
कदम से कदम ना.....
राग जिनगी के बा बहुत कठिन,
तालऽ से तालऽ ना अब मिला के चलीं
कदम से कदम ना.....
आये लाख बाधा सामना ना करी,
दुर्दिन में अब सुदिन के गीत गाते चलीं
कदम से कदम ना.....
राह में मिल गइल गर पर्वत खाई,
हिम्मत से ओकर सामना ना करी,
कदम से कदम ना.....
नाश-सिरिजन बा जिनगी के साहिल,
विनाश में सिरिजन के गीत गाते चलीं
कदम से कदम ना.....
आसान भा कठिन सब कृपा ईश्वर के
असहज में सहज के गीत अब गाते चलीं
कदम से कदम ना.....
आपन भा पराया ना बाटे केहू,
सब ईश-सन्तान ह बताते चलीं
कदम से कदम ना मिला के चलीं
गीत जिनगी के अब गुनगुना के चलीं
सब केहूँ के आपन बना के चलीं
कदम से कदम ना.....

www.bhojpurisahityangan.com

बेड़ा पार लगा लऽ

छोटहन बस्ती,
हरियर-हरियर
खूबसूरत चेहरा
पहाड़ी के नियरा
हल्का-फुल्का
फइलल कोहरा
खामोशी बिखरावत
शान्ति-रस घोरवावत
मुस्कुरात रहे हरदम
जिन्दगी के राज बतावत
अचल खड़ा कहत हरदम
शान्ति ह जिनगी के राज
'गुप्त' रहऽ अब करम पथ पर
हंस-गावऽ मौज मनावऽ
बा जिनगी के इहे राज
अडिग रह भला कऽ के
बेरा पार लगा ल आज ।

www.bhojpurisahityangan.com

नापऽ मत एके तराजू

देख मन एके चश्मा से,
सदा तू हर इन्सान के ।
देख हरदम हर चश्मा से,
चिन्हऽ ना तू हैवान के ।
देखे के गर चाहत बारऽ,
देखऽ ओकरा दिल से ।
उठ बइठ के संघत कऽ के,
पहचानऽ अब तू दिल से ।
मिल जइहन कतहीं ऊ,
अब साधु बनके शैतान ।
भा कतहीं मिल जइहन,
मूरत चोरावत ऊ हैवान ।
देख, राम-रहीम बन के ऊ,
इज्जत आपन गँवा दिहलन ।
खतम कइलन अब नैतिकता के,
साधु के इज्जत गँवा दिहलन ।
भावुकता के छोड़ भाई,
देख सोंच विचार के ।

www.bhojpurisahityangan.com

नापऽ मत तू एके तराजू,
नीमन आ गँवार के ।
उठ-बइठ के चिन्हऽ सबके,
के नीमन भा बुरा ।
सोंच-समझ के आगे बढ़िह,
ना त ले ले होई छुरा ।
खाली देखला से ना कबो,
परख होई इन्सान के ।
होश में रह के देख हरदम,
साधु आ शैतान के ।

www.bhojpurisahityangan.com

जल्दी धाई

कइसन आइल जमाना देख हो भाई,
दिन-रात होत बा छेड़खानी हो भाई ।
धो देले बा लोगवा अँखिया के पानी,
रहिया चलत बोलत बा गंदा बानी ।

लोक-लाज छोड़ के करत बा बुराई,
चिन्हत नइखे आपन-विरान हो भाई ।
तनिको बुझात नइखे ओकरा हो भाई,
का कहीं तोहरा से सुन हो भाई ।

चिन्हात नइखे बाप के आपन बेटी,
ई बुरा कलंक ओकर कबहूँ ना मेटी ।
कइसे ऊ जीअत बा इहवाँ हो भाई,
लाज शरम छोड़ देलख देखऽ हो भाई ।

www.bhojpurisahityangan.com

कठिन बा निकलल माई-बहिन के,
अश्लील गीत बाजत बा भोजपुरी के ।
एही से उठत बा वासना के भाव,
देखते डूबत बा संस्कार के नाव ।

लूटाता हर जगह चौराहा पर इज्जत,
हर जगह होत बा नारी के फजीहत ।
अब होता बलात्कार आमने-सामने,
शहर का ? अब होत बा हर कोने-कोने ।

'गुप्त' के विनती बा सुनऽ रास बिहारी,
हे अरिसूदन ! हे मुरारी ! गिरिवरधारी ।
अब आके इनकर, इज्जत बचाई,
ना त ई दुनिया अब नाश हो जाई ।

t

www.bhojpurisahityangan.com

अपूर्णता के छोड़

पूर्णता के छोड़,
अपूर्णता के ओर ।
जा रहल बा लोग,
सत्य के छोड़ ।
असत्य के ओर,
जा रहल बा लोग ।
करम से विमुख,
अकरम से आमुख ।
गीता भूल रहल बा लोग,
धरम के छोड़ ।
अधरम के ओर,
जा रहल बा लोग ।
सिरजन से विमुख,
विसरजन से आमुख ।
जा रहल बा लोग,
यदि रही इहे हाल ।
नाश हो जाई संसार,
लौट अनीति के ओर ।
बुड़ाई के छोड़,
बढ़S नेक डगर ।
अपूर्णता के छोड़ ।

t

www.bhojpurisahityangan.com

कन्यादान

भाग्यशाली बाप उहे ह,
जे करे कन्या के दान ।
ऊ भाग्यशाली ना ह भाई,
जेकरा ला बा धन महान् ।
पवितर घर उहे होला,
जेकरा में माड़वा छवाय ।
बिना मारवा के दान ना होला,
ऊ बेटी लक्ष्मी कहलाय ।
सब दान से लमहर बूझीं,
जवन कन्यादान कहलाय ।
कन्यादान जे करेला बाबू,
अवश्मेघ के फल पा जाय ।
पहिले प्रेम बिआह करावे,
पाछे दान कर ले जाय ।
ई करनी ह बेटी बेंचवा के,
ऊ अब पाछे लाज छुपाय ।
पहिले त रहे बेटी बिकात,
अब बेटओ बिकात बा ।

www.bhojpurisahityangan.com

दान-दहेज नीति ना कवनो,
रिश्वत खूब लियात बा ।
बेटा बेंचे के नीमन नीति ई,
दान-दहेज कहलाय ।
बेटी बेंचे के नीति नमूना,
प्रेम-बिआह हो जाय ।
'गुप्त' कलि के अंतिम लच्छन,
बेटा-बेटी दुनो बिकाय ।
मोंछ अंइठ के तिलक लिआय,
चुपके प्रेम बिआह हो जाय ।

t

www.bhojpurisahityangan.com

का से का हो गइल

का से का हो गइल देखऽ भइया देखऽ भइया,
राड़, साँड़ संन्यासी बिगड़ल देखते-देखते ।

का से का हो गइल देखऽ भइया देखऽ भईया,
लड़कियन के ओढ़नी उतरल देखते-देखते ।

कइसन बहल पुरवइया देखऽ भइया देख भइया,
मनई-मनई के बैरी भइल देखते-देखते ।

कइसन आइल जमाना देख भइया देख भइया,
बाप-बेटा के रिश्ता बिगड़ल देखते-देखते ।

का से का हो गइल देख भइया देख भइया,
भाई-भाई के दुश्मन भइल देखते-देखते ।

कइसन आइल जमाना देख भइया, देख भइया,
जिनगी आदमी के सस्ता भइल देखते-देखते ।

कइसन आइल जमाना देखऽ भइया, देखऽ भइया,
लोगवा के बोलिया कुबोल हो गइल देखते-देखते ।

का से का हो गइल देख भइया देखऽ भइया,
बाप-बेटी के नाता बिगड़ल देखते-देखते ।

www.bhojpurisahityangan.com

मदद दुखी के

पैर से पंगु
हाथ विहीन
लागे पेट-पीठ एक समान
फाटल चीथड़ तन पर कपड़ा
अंखिया धंसल
चमड़ी लटकल
थम-थम चले
कहत बाबू भईया
दे द कुछ पंगु के
भला करीहन शिव तोहर
कहलस पंगु कांवरधारी से
भाग इहाँ से जल्दी ते
कहलस कांवरधारी पंगु से
मुस्कुरात पंगु
रहिया धइलख आगे के
भला करऽ बेबस के गुप्त
छोड़ऽ गइल बाबाधाम
मदद करऽ तू दुखी के
इहवे लेल भोले के नाम ।

t

www.bhojpurisahityangan.com

महापाप

जुल्म पर जुल्म कइल महापाप ह,
बाकि जुल्म के खिलाफ लड़ल पुण्य ह ।

जुल्म बरदाश्त कइल महापाप ह,
बाकि ओकर खिलाफ कइल पुण्य ह ।

घृणा कइल फइलावल महापाप ह,
बाकि प्रेम बढ़ावल लमहर पुण्य ह ।

दोसरा के दुख देहल महापाप ह,
बाकि पराया सेवा कइल महापुण्य ह ।

शिवलिंग पर दूध चढ़वला से लमहर,
दूध से मरत शिशु के दूध देहल पुण्य ह ।

माई-बाबू के सेवा कइल चारो धाम ह,
बाकि दुरगती कइल कुधाम ह ।

t

www.bhojpurisahityangan.com

सुझाव

चल किनारे-किनारे,
व्यस्त सड़क बा ।
चल किनारे-किनारे,
अपढ़ गंवार मोछ मुड़वा ।
बनल ड्राइबर,
पीके शराब गाड़ी चलावत ।
ओकर का होई,
ना कुछ होई ।
अनेरे जान गँवइब तू,
गर ऊ पकड़ में आई ।
मारत समइया,
पुलिस आई धाई ।
पइसा लेके रक्षा करी,
ना दी दण्ड ओकरा के ।
गाड़ी चलाव धीरे-धीरे,
ना समझाई ओकरा के ।
पइसा मिलल पुलिस के,
काम तमाम ।
सलाह देत गुप्त,
ई बतिया कहस ।
मान बतिया,
व्यस्त सड़क बा ।
चल किनारे-किनारे ।

www.bhojpurisahityangan.com

माई बनऽ

शब्द माई से बढ़के लमहर,
कवनो शब्दकोष में नइखे ।
एकर अरथ बतावल भइया,
केहू का बस में नइखे ।
जेकर हाथ पहिले दुआ में,
उहे माई कहाली ।
जे सेवा में आगे रहे,
माई उहे जानाली ।
नौ महिना गरभ में राखे,
पीड़ा दर पीड़ा सहेली ।
बड़ा भइलो पर बबुआ के,
तनिको ना बोलेली ।
भूखल पिआसल रह के खुद,
सेवा निस्वार्थ करेली ।
ठंडी से ठिठुरत बचवन के,
छतिया से धरेली ।
अनुपम त्याग माई के बा,
हियरा निस्वार्थ से भरल ।

www.bhojpurisahityangan.com

भाई-बहन सगे-सत्म्बन्धी,
सभे छोड़ के टरल ।
ना बाबू ना भइया केहू,
ना भाई कोई मितवा रे ।
बा दुनिया में अगर केहू त,
उहे कहाली मइया रे ।
केतना दरद बा हियरा में,
तबहूँ कुछ ना कह पावस ।
बबुआ केतनो बोलस-मारस,
तबहूँ छतिया से लगावस ।
हार मनलन हरि जेकरा से,
जशोदा मइया ऊ कहइली ।
माई-महिमा अपार जगत में,
देवकी सुत गले लगइली ।
सब रिश्ता-नाता छूट जाला,
पर कबो ना छूटे माई के ।
इतिहास उल्ट-पलट के देखऽ,
पइबऽ दुरयोधन माई के ।

t

www.bhojpurisahityangan.com

उल्टा चोर कोतवाल के डाँटे

जेकरा रग-रग में भरल बा चोरी के भाव,
देत उपदेश सगरो उहे घूमत-फिरत बा ।
अवसर पाई चोरी-डकैती हरदम करे,
भाई, उल्टा चोर कोतवाल के अब डाँटत बा ।

ऊ ना करे केवल धन-दौलत के चोरी,
भाई, धरम-ईमान दूनो ऊ बेचत बा ।
दिन के अँजोर में धरम करम के बात करे,
रतिया में बुरा कुकर्म हरदम ऊ करत बा ।

के बा असली आ के बा नकली साधु संत,
एकनी के पहिचान कइल अब मुश्किल बा ।
जहवाँ जइब हर ओर एकनी के हाट गरम बा,
जइसन चेला वइसन गुरू उहवाँ मिलत बा ।

www.bhojpurisahityangan.com

झपास

देखऽ झपासन के कइसन बा हाल,
दोसरे का धन खातिर भइल बेहाल ।
अपना ना बाटे कुछ हटे कंगाल,
दोसरा के देख आँख कइले बा लाल ।
जगह ना रहे के बढ़वलक जंजाल,
दोसरे में काम खातिर फेंकले बा जाल ।
लइकाइए से देखे के मिलल ई चाल,
झीटझाट के काम कइलक हटे दलाल ।
झूठहूँ फुटानी बा अइसन झपासन के,
कतहीं पीटा गइल ना कवनो मलाल ।
जेकर ई लेलक देलक ना कबहूँ,
बेमतलब ई मंगला पर कइलक बवाल ।
बुझाता झपासन के अइसन बा ख्याल,
दोसरे के ठग के करीं गोटी लाल ।
'गुप्त' एह झपासन से रहऽ होशियार,
तहरे के लूट के ई होई खुशहाल ।
झपास भले आपन भा होखे पराया,
ओकरा ला करिह मत तनिको तू दाया ।
तुड़ लिहऽ नाता फुलावे दिहऽ गाल,
चाहे रचत रहे कवनो बवाल ।

t

www.bhojpurisahityangan.com

गोरखधन्धा

एने ओने झाँक-झूँक,
कविता हम बनाई ले ।
बिना कविता के रचले,
कवियो हम कहाइले ।
रोजी ह हमार इहे,
आन्हर सबके बनाइले ।
जेने-जेने जाईं हम,
पेंचवा खुब फँसाइले ।
झूठ के सउदागर हईं,
साँच ना बताइले ।
साँच पर चले वाला के,
झूठे राह देखाइले ।
जेने-जेने जाइले,
तहलका खूब मचाइले ।
बतिया घूमा-फिरा के,
लोगवन के भरमाइले ।
एने-ओने घूम-घूम के,
उल्लू सीधा करी ले ।
बुरबक बनाई सबके,
आपन जेबी भरीले ।
मरे के किनारे अइलऽ,
चेतऽ ना अबहूँ से तू ।
'गुप्त' गोरखधन्धा छोड़ऽ,
अइसने राह देखाइले ।

www.bhojpurisahityangan.com

प्रेम-2

नइखे अंतर बुद्ध-ईसा में,
पाठ पढ़वलन एके जान ।
करूणा, क्षमा, प्रेम भाव बा,
संतन सबके इहे फरमान ।
ना सेवा से लमहर पूजा,
प्रेम से लमहर ना बा ज्ञान ।
जे सबका सेवा में लागल,
हिया में पवलख ऊ भगवान ।
प्रेम दिवानी मीरा भइली,
सूर भइलन भवसागर पार ।
प्रेम भक्ति से भिलनी के,
खुल गइल मुक्ति के द्वार ।
रामकृष्ण का प्रेमे पगलन,
नरेन्द्र भइलन विवेकानन्द ।
हिन्दू धरम पताका का संग,
सोहरत बढ़वलन विवेकानन्द ।

www.bhojpurisahityangan.com

प्रेमे ईश्वर प्रेम भक्ति,
गुप्त प्रेम से बनल संसार ।
एकरा के अपना ल भाई,
सब धरमन के इहे सार ।
ना मंदिर ना मस्जिद कवनो,
ना कवनो कर्मकाण्ड में ।
प्रेम से भरल हिया बा जेकर,
उहे विचरल ब्रह्माण्ड में ।

t

www.bhojpurisahityangan.com

लाज-शरम

जेकरा रग-रग भरल बा चोरी,
का उपदेश दी दोसरा के ।
घूम-घूम भरमावत सबके,
का भला करी दोसरा के ।
मौका का तलाश में रही,
पलखत पाई त करी चोरी ।
उल्टा चोर कोतवाल के डाँटी,
अपने खुद करते रही चोरी ।
धन-दौलत के चोरी कइलक,
ईमानो धरम बा बेंच गइल ।
चउकी पर गरज-गरज के बोले,
चउका पर सब बा बेंच गइल ।
साफ-सुथरा बोले हरदम,
भीतरे-भीतरे करे घात ।
का कहीं ओइसन मनई के,
बात बना के बा अगरात ।
के बा असली भा के नकली,
पहचान ना एकर भइल ।
मुश्किल में पड़ल बा जियरा,
ईमान धरम ले गइल ।
चारो ओरी हाट गरम बा,
एकनी का ना लाज-शरम बा ।
'गुप्त' कहे सुनऽ भाई बुद्धु,
गुरू-चेला के एके मरम बा ।

www.bhojpurisahityangan.com

आपन के

जे बूझे से ही बा आपन,
दोसर आपन बाटे के ।
स्वारथ सधे उहे बा आपन,
दोसर आपन बाटे के ।
ना बाबू ना भाई आपन,
ना सहोदर भाई ।
जनम देला भर नाता रहल,
पाछे साथ छोड़ाई ।
रिश्ता बाटे उहे टिकल,
जहाँ स्वारथ लागल ।
तनिको सा फरक पड़ गइल,
रिश्ता छोड़ के भागल ।
ना धन आपन ना जन आपन,
कहे के दुनिया आपन ।
एक दिन साँस निकलिहें तन से,
ई देहियो ना आपन ।
झूठ प्रीत लागल दुनिया से,
भरम में मन भुलाइल ।
भरमे पड़ल बा ई दुनिया,
ना केहू के चिन्हाइल ।
भरम के रात में सब बा सूतल,
ना केहू बा जागल ।

www.bhojpurisahityangan.com

सूतल बा सब मोह निशा में,
नीक करम से भागल ।
मोहे बाबू मोहे भाई,
मोहे में नीक करम भुलाइल ।
तब दोसर के आपन लउकी,
जेकरा से प्रीत बढ़ाई ।
बा सम्हर गइल जे जग में,
दुनिया कहे अब पागल ।
बाकी सफल नर उहे जग में,
हरि से नेह अब लागल ।
नाता छोड़ जगत के सबहिं,
गुरू चरणन में भागल ।
उहे लोग एह दुनिया में,
हरदम रहल जागल ।
गुरू समान ना दोसर जग में,
लोभ जेकरा ना लागल ।
एक उहे आपन बा जग में,
ना दोसर केहू लागल ।
'गुप्त' जय हो जय हो तोहर,
जय-जय-जय हो जाई ।
बेवफाई अगर ना छूटल,
क्षय-क्षय-क्षय हो जाई ।

t

www.bhojpurisahityangan.com

समय

क्षणभंगुर बा जिनगी इहो,
एक दिन छोड़ के चल जाला ।
अभिनव करके रंगमंच पर,
हँसा-रूला के चल जाला ।

बंध गइल समय जिनगी से,
नील गगन में विचरेला ।
कबो ना मुड़ के पाछे देखे,
अपना मस्ती में झुमेला ।

तेज गति से पंख फइला के,
उड़ान हर दिशा में भरेला ।
बुलाये केहू भा ना बुलावे,
पल-पल सब के पास रहेला ।

जनम लेला मनई धरती पर,
कुछ समय तक इहाँ रहेला ।
शिशु आ लइकाईं बिता के,
किशोरावस्था में पहुँचेला ।

www.bhojpurisahityangan.com

आपन चमक-दमक देखा के,
ओकरा से विदा हो जाला ।
जब जवानी के रंग आइल,
जिनगी के चोटी पर चढ़ जाला ।

पर टिक ना पावेला उहवों भी,
नीचे फिसल के आ जाला ।
धीरे-धीरे बूढ़ा हो के,
दुनिया से विदा हो जाला ।

समय के खेल बड़ा निराला,
ऊ हकीकत खेल देखावेला ।
कइल काम मेहनत से जे,
सही मंजिल पा जाला ।

'गुप्त' तनी मानऽ बतिया हमर,
तूहो समय के संग चल ।
ओकरा डेग से डेग मिला के,
सफर आगे के करत चलऽ ।

www.bhojpurisahityangan.com

अरथी पर होई विदाई

बुलन्द करऽ इरादा आपन,
भीतर से खूब दहाड़ऽ ।
आँधी आ तुफान जे आवे,
ओकरो के पछाड़ऽ ।
जन-जन से तू प्रीत लगाल,
दीन-दुखियन के सेवा ।
जीवन के ई लक्ष्य बनाल,
एही से मिली मेवा ।
अइसन करनी कर ल भाई,
मरलो पर गीत गवाय ।
अइसन कबहूँ मत करऽ कि,
जीअते नरक भेंटाय ।
अइसन करनी कर जिनगी में,
जीवन-बाग तोहर खिल जाय ।
सुवासित सबके कर देवे,
आ खुद सुवासित हो जाय ।

www.bhojpurisahityangan.com

तार हिया के हिया से जोड़,
कर ल नेक कमाई ।
जहियाँ प्राण-पखेरू जइहें,
अरथी पर होई विदाई ।
'गुप्त' कहे एही से हरदम,
मन के कर सफाई ।
बेईमानी शैतानी छोड़,
मन के कर सफाई ।
बेईमानी शैतानी छोड़,
तोहर जय-जय हो जाई ।
ना त जानऽ जिनगी तोहर,
मुफ्ते में अब चल जाई ।

t

www.bhojpurisahityangan.com

सफलता

चलल दिशा जे जलधारा के,
ओकरे मिलल किनारा बा ।
कइलख आपन जिन्दगी पार,
पर के देलख सहारा बा ।
चलल चाल उल्टा जे हरदम,
कबहूँ ना कइलख पार किनारा ।
छटपटात धारा में डूबल,
ओकर भइल खतम खेल सारा ।
विश्वास के साथे जे केहु चलल
सफलता पवलख जिन्दगी में ।
साहस नइखे हिया में जेकरा,
का करी ऊ अपना जिन्दगी में ।
कदम-कदम पर ठोकर खा के,
सम्भल गइल जे जिन्दगी में ।
बनल महान् उहे तब आगे,
सब कुछ पा गइल जिन्दगी में ।
भला कइलख जे सदा दोसरा के,
हर युग में उहे पुजाइल ।
सेवा जे कइलख रंक फकीर के,
बड़का में हरदम उहे गिनाइल ।
नइखे विश्वास त जान ल तू,
दशरथ माँझी के गजब कमाल ।
काट छाँट छेनी से पर्वत,
बनवलन राह मचल धमाल ।

www.bhojpurisahityangan.com

जज्बा

जिये के ना जेकरा चाह,
कह मत कवो दिल के बात ।
लागल रहऽ धुने अपना,
खुद बना ल आपन राह ।
जेकरा दिल में जज्बा बा,
का करी दोसरा के आश,
खुद बना के आपन रहिया,
ना जाई केहू के पास ।
भर के उमंग करके विश्वास,
जे कदम बढ़वलख आगे ।
उहे चाँद के धरती पर उतरल,
खूब नाम कमइलख आगे ।
जेकरा आगे नाथ ना पगहा,
ना बा कोई संकल्प विचार ।
एने-ओने भटक गइल जे,
ना पार कइलख जिनगी के धार ।
जहाँ चाह बा उहाँ राह बनल,
ना त जिन्दगी भइल बेकार ।
सदा चाह के बढ़ल जे आगे,
ओकर जिनगी भइल साकार ।
शहर बजरिया घूम-घूम के,
काहे हरदम डींग हाँके ल ।
अवसर पा के काहे हरदम,
गिरगिट जइसन रंग बदले ल ।

www.bhojpurisahityangan.com

उमंग आ जज्बा के साथ जे,
दूर नजरिया अपनलख ।
असंभव के सम्भव बना के,
दुनिया में नाम खूब कमइलख ।
मुश्किल नइखे दुनिया में,
जे कइलख हिम्मत से काम ।
मुश्किल देख गर छोड़लख रहिया,
गिरल जिनगी से भइल बदनाम ।
लेके निशाना तीरवा से,
सधलख लक्ष्य ध्यान से ।
ओकरे मिलल सही सफलता,
खुशी खुब मिलल जहान से ।
बइठ चौक-चौराहा पर,
डींग हाँके बदललक रंग ।
'गुप्त' जइसन सोंच भइल,
जे केहू कइलक ओकर संग ।
अइसन लोग मीठ बोलिया होला,
मीठ बोल खूब फेंके जाल ।
पोल ओकर खुल जाला जहिया,
दुम दबा भागे तत्काल ।
गिरगिट जइसन रंग बदल के,
धोखा देवे सबका संग ।
गुप्त कहे अइसन कपटी के,
सउसे देह बगुला के अंग ।
'गुप्त' कहे सुन भाई भोला,
कुछ ना मिली, मिली लोला ।
कतनो छटपटइब अब तू,
पड़ल रही सब इहवे गोला ।

www.bhojpurisahityangan.com

लखनवी नवाब

जहर शराब ह जिनगी के,
तनवा धीरे-धीरे खाय ।
जेकरा-जेकरा लत लागल,
देखल ऊ मरघट पहुँचाय ।
ह ऊ के ऊ ना पहिचाने,
राजा-रंक आ कि फकीर ।
रग-रग एकर बिख भरल बा,
नस-नस बेधे सकल शरीर ।
खा जाला ई गुरदा फेफड़ा,
लीवर के पूरा खा जाय ।
एकरा के बुझऽ जानी दुश्मन,
दौलत सब नाश हो जाय ।
तबहूँ अंइठत रहे हरदम,
कदर ना जाने केहू के ।
बड़बड़ात ई बोले बोल,
आँख दिखावे केहू के ।
लाज-शरम ना तनिको ओकरा,
लत लागल दारू के जेकरा ।
लाल आँख कर देखे सबके,
लखनवी नवाब के हिम्मत ओकरा ।

www.bhojpurisahityangan.com

झूमत-गावत घरे आवे,
मउगी से करे तकरार ।
ना भेंटाइल खाना जबहिं,
डंडा उठाके देलख मार ।
'गुप्त' सुन तनी बतिया मान,
छोड़ द तू पीअल शराब ।
मेहर बेटी के इज्जत रखऽ,
मत बन लखनवी नवाब ।

www.bhojpurisahityangan.com

शब्द-चयन

शब्दन पर ध्यान दीं,
जुबान पर लगाम दीं ।
शब्दे से पहचान बा,
शब्दे से इन्सान बा ।
ताकत एमे बाटे अपार,
जिनगी के इहे आधार ।
करीं चयन ओह शब्दन के,
मन में तनी सोंच विचार ।
जवन कुछ कहिला रउवा,
कबहूँ ना भुलाला ।
कइला पर गलती भी,
वापस कबहूँ ना होला ।
रोक नइखे बोली पर,
ना लागे ला अधेला ।
गलत शब्द चयनन से,
रहेला होत झमेला ।
कबहूँ-कबहूँ बद शब्द,
जान लेवा हो जाला ।
महज एक बद शब्द से,
महाभारत हो जाला ।
अन्धा कह के द्रौपदी,
दुरजोधन के भरकौली ।

www.bhojpurisahityangan.com

लहकत अगिया में कृष्णा,
घीव डाल लहकौली ।
क्रोधे अब बदला लेलख,
जुआ में छल से हरवलक ।
कृष्णा का ताना के अब,
चोटी पकड़ खिचववलक ।
मिलिहें सबूत अनेक,
सुनऽ दुनिया में भाई ।
याद कर शिशुपाल के,
जिनकर सिर कटल भाई ।
गुप्त अगर बूझत नइख,
तनी इतिहास पढ़ लऽ ।
कर के विचार मन में,
आपन इतिहास तू गढ़ लऽ ।

t

www.bhojpurisahityangan.com

मेहरी

आना-कानी में जान गइल,
विधवा भइली मेहरी ।
देखते-देखते इ गइली,
दूनो बेटी टुअरी ।
आधा बीता धरती खातिर,
कान फूँकली दुलरी ।
अब राते-दिन विलापत बारी,
बइठ के आगे डेहरी ।
केकरा के अब कहब पापा,
पूछे बेटी तेतरी ।
के कमाई के खिआई,
के जाई अब दोकरी ।
आग लगा के का पइलू,
पूछे बेटी खेखरी ।
के जाई अब बाहर-भीतर,
के उठाई टोकड़ी ।
जानो गइल मुकदमो भइल,
कहवाँ से मिली दमड़ी ।
कोटवा में जईबु पैर दुखाई,
सुदवा पर लेबु दमड़ी ।

www.bhojpurisahityangan.com

दुअर बनावे के रहे गर,
देलु जनम काहे ला ।
अंइठ देतु जनमते घेंटवा,
पललू पोसलू काहेला ।
तनिको ना बुझाइल तोहरा,
आगे चल के होई का ।
कइसे होई शादी-विवाह,
तोरा से पार लागी का ।
झूठो आन-बान खातिर,
मरववलू तू बाप के ।
कुहुकत रही जिनगी भर,
दुनो बहिन बिन बाप के ।
देके जनम हमनी के तू,
जीयते जी मार देलू ।
छाया बाप के जिनगी से,
हरदम खातिर छीन लेलू ।
'गुप्त' मानऽ बतिया हमर त,
तोहर बेरा पार हो जाई ।
ना पड़बऽ झंझट में कबो,
जिनगी तोहर पार हो जाई ।

t

www.bhojpurisahityangan.com

नारी

नारी विधि के विधान हई,
करूणा के निधान हई ।
सिरिजन के निदान हई,
ईश्वर के बखान हई ।
जगत-तारण हार हई,
समाज के सम्मान हई ।
परिवार के कमान हई,
रंगमंच के प्रधान हई ।
ममता के अवतार नारी,
परिवार के श्रृंगार नारी ।
आंगन के गुलजार नारी,
देवी रूप साकार नारी ।
जिनगी के संघर्ष नारी,
अमरख नारी बाउर के ।
शाम-सबेरे दरस नारी,
सुख-दुख के हरख नारी ।
नदिया के पार हई,
बहत मझधार हई ।

www.bhojpurisahityangan.com

नइया के आधार हई,
ईश्वर के उपहार हई ।
करम-धरम में कुशल नारी,
धन-बल आ ज्ञान नारी ।
दूध में उफान नारी,
कली में मुस्कान नारी ।
खेल के मैदान में,
चाहे आसमान में ।
'गुप्त' उगत विहान में,
सबसे आगे दान में ।
कुशल नारी करम खेत में,
नारी धन-बल ज्ञान में ।
दूध में उफान नारी,
कली में मुस्कान नारी ।

www.bhojpurisahityangan.com

भल बा

पूजा से नीक बा,
सफाई तन-मन के ।
सक्षात माई-बाप में,
देख तू भगवान के ।
घुक-घुक जियला से,
नीमन बा मर गइल ।
झगड़ा से त नीक बा,
मन-बुद्धि से टल गइल ।
झंझट से नीमन बा,
धीरे से खिसक गइल ।
धाम से त नीमन बा,
दुखियन के सेवा कइल ।
विद्वान से नेक बा,
काम अपढ़-गंवार के ।
कविताई से भल बा,
भल कऽ के देखाई के ।
ना देहला से भल बा,
मना कइल केहू के ।
कहला से अच्छा बा,
अब कऽ के देखाई के ।
'गुप्त' निराला बन गइल,
दुखियन का सेवा से ।
केहू तऽ महान् भइल,
नेक काम कइला से ।

www.bhojpurisahityangan.com

महाविनाश

आहिस्ते-आहिस्ते देखत सब कुछ बदल गइल,
हमनी सभन के जिन्दगी के रफ्तार बदल गइल ।
बदल गइल मौसम के सुखद सुहावना नजाकत,
आ बदल गइल इंसान के जिनगी के शराफत ।
आहिस्ते-आहिस्ते.....।

बूझ गइल जगत से राधा-कृष्ण के प्रेम बाती,
आ डूब गइल नेक चरित्र नया गंगा के धार में ।
धरम-ईमान सब कुछ चल गइल चूल्हा भार में,
आहिस्ते-आहिस्ते.....।

बदल गइल भाव मंदिर-मस्जिद, खुदा-ईश के,
जिनगी बदल गइल देखते-देखते मनई के ।
दया-करूणा, सहयोग आ शान्ति उल्टा हो गइल,
लोगवा स्वयं मुक्कदर के बा सिकन्दर बन गइल ।
आहिस्ते-आहिस्ते.....।

www.bhojpurisahityangan.com

ना रह गइल बा केहू के केहू में सहन के ताकत,
लोगवा बन गइल बा एक दोसरा के आफत ।
भाई-भाई के बहका के सभे लेत बा चुस्की,
बाहर-भीतर धीरे-धीरे ले रहल बा मुस्की ।
आहिस्ते-आहिस्ते.....।
लाज-शरम सब मेट गइल गिर गइल नजर के पानी,
नेह, रिश्ता-नाता सब छूट गइल ई जानी ।
आध्यात्मिकता के भूल भौतिकता के चाह में,
दनदन जा रहल बा लोगवा विनाश का दरगाह में ।
आहिस्ते-आहिस्ते.....।
अबहूँ से तू चेत ना त महाविनाश होई,
देखते-देखते ई दुनिया एक दिन बदल जाई ।
रह जाई ना बाग बगिचा सृष्टि मेट जाई,
देखत-देखत चल जाई महाविनाश का धाह में ।

t

www.bhojpurisahityangan.com

दउड़S ख्वाब के पाछे

बेशक दउड़S ख्वाब के पाछे,
मत शॉर्ट कट मार्ग अपनइह तू ।
एक दिन होइहन सपना पूरा,
ख्वाब के पीछा मत जइह तू ।
क के पहिले एके कामवा,
दोसरा में हाथ बँटइह तू ।
एके साधे सब कामवा सधे,
ना त हरदम पछतइह तू ।
सीख सफलता-विफलता से,
मिलल विफलता काहे हमरा ।
मिलल सफलता त काहे मिलल,
जाने के बा राज ई तोहरा ।
जिन्दगी एगो पुस्तक जइसन,
तरह-तरह के पाठ पड़ल ।
सीखS अनुभव दुनो से,
विद्वानन के विचार भरल ।
भरल हैरानी परेशानी से,
हमर तोहर जिन्दगी बा ।
धइल-कइल परेशानी हउवे,
तब कवन बात चिन्ता के बा ।
बीते द ना लम्हा भाई,
बीतल बतिया कबो ना आई ।
अब खड़ा बा तोहरा सामने,
ओह के सफल बना ल भाई ।

www.bhojpurisahityangan.com

राहत

घन घोर घटा,

घटा में छाइल ।

पर ना बरसल,

मनवा तरसल

लोगवा भागल

गछिया के ओर

बहत बेयरिया में

उहवाँ सभे बइठल

ठंडी मिलल

गरमी से देहिया ठंडाइल

लोगवा झूमल

गरमी से राहत मिलल ।

www.bhojpurisahityangan.com

लोग

झूठ पर झूठ बोलत जा रहल बा लोग,
एक दोसरा के नीचा दिखा रहल बा लोग ।

धन ला रिश्ता छोड़ दूर भाग रहल बा लोग,
सवारथ ला आपस में मर-कट रहल बा लोग ।

दिन-दहाड़े छेड़खानी कर रहल बा लोग,
माई-बहिनी के इज्जत लुटा रहल बा लोग ।

जाँति-पाँति के बदबू फइला रहल बा लोग,
आपन दीया से खुद घर जला रहल बा लोग ।

t

www.bhojpurisahityangan.com

जौहर

देखनी हम बहुतन के इहवाँ,
मगर जौहर जइसन ना देखनीं ।
प्रेम से सनल हिया देखनीं,
राग-द्वेष से परे देखनी ।
सभ से मिलत-जुलत देखनीं,
हर बाधा से लड़त देखनीं ।
जब देखनी तब वइसन देखनीं,
रग-रग में देश भक्ति देखनीं ।
भरल मिजाज मजकिया देखनीं,
चेहरा पर मुस्कान देखनीं ।
सभ देखनी पर एक ना देखनीं,
अन्दर में ना गरूर देखनीं,
एक दिन जौहर चल जइहन ।
पर हर दिल में उनकर दिल रही,
आसमा में गुंजत नाम रही ।
चिर अमर रही उनकर रचना,
शायरन के दुनिया में एक ।
जौहर के भी नाम रही,
जौहर के भी नाम रही ।
अलग उनकर पहिचान रही ।

t

www.bhojpurisahityangan.com

सोंच के चलऽ

व्यवसायी का बूझी कबो,
केकरा भीतर का बाटे भाव ।
ओकरा हरदम बनल रहेला,
धन कमाये के हरदम चाव ।
जेकरा हिया में नेह सही बा,
ओकरा ना गलत बुझाई ।
मनवा से जुड़ल जे हरदम,
का हिया के बात बुझाई ।
मन के प्रकृति इहे त,
दोष दोसरा में देखी ।
हियरा के प्रकृति उल्टा,
अपने में हरदम देखी ।
ऊ दोसरा के दोष खोजेला,
जेकरा में दोष घनेर ।
ओकरा ला ई बात कहाइल,
चले ना जाने अंगने टेढ़ ।
पढ़ल होखे भा अनपढ़ होखे,
नीक ना ऊ कहाई ।
नीक हरदम उहे कहाइल,
खुद में दोष देख पाई ।
जे खुद में दोष निहारल,
उहे आगे बढ़ गइल ।

www.bhojpurisahityangan.com

तूहूँ उहे करऽ बाबु,
नीक राह जब मिल गइल ।
देखा-देखी मत कर तू,
काल के बनबऽ कौर ।
दोसरा के जे नकल कइलक,
ना मिलल ओकरा ठौर ।
बाल बचवा के फिकर ना भइल,
डूबी खानदान के नाम ।
हरदम तनी सोंच के चलऽ,
ना त बिगड़ी सब काम ।
बिना सोंचले कुछओ करब,
हो जइब तू बदनाम ।
'गुप्त' करऽ तू अइसन काम,
सगरो होखे जग में नाम ।
सब कोई रही अमन चैन से,
ना केहू होई बदनाम ।
धरती लागी सरग का जइसन,
हिया में राखऽ हरि के नाम ।

www.bhojpurisahityangan.com

दहेज रूपी कोढ़

कुचकुच अन्हरिया,
आ सिसकत बेयरिया ।
उमड़ि-घुमड़ि गरजे,
कारी रे बदरिया ।
गंवे-गंवे बूंदा-बूंदी,
सगरो फुहरिया ।
दमकत बिजुरिया में,
लउकल एगो गोरिया ।
थर-थर काँपत रहे,
ओकरो त देहिया ।
चिहुकि-चिहुकि देखे,
गोरी चारो ओरिया ।
पातर-दूबर रहे,
लकलक देहिया ।
तनवा सूखल रहे,
ओठे नाहिं ललिया ।
ठनके बदरिया जब,
चिपके ऊ गछिया ।
उचकि उचकि हरदम,
देखत रहे रहिया ।
गंवे-गंवे गइनी अब,
ओकरे पजरिया ।

www.bhojpurisahityangan.com

मन घवड़ाइल ओकर,
पड़ल जब नजरिया ।
जियरा दुखित भइल,
देखी के शरीरिया ।
देखी के फेरी लेलक,
अपनो नजरिया ।
टपटप चूए ओकर,
अँखिया से लोरवा ।
कातरऽ नजर से ऊ,
ताके चारो ओरिया ।
छतिया उघार नाहिं,
तन पर अँचरवा ।
फाटल-चिटल ओकरा,
देह पर कपड़वा ।
गतर-गतर जरल,
रहे ओकर देहिया ।
केतना बताईं ओके,
दुख आ दरदिया ।
पियरऽ ढाबुस जस,
रहे ओकर देहिया ।
पेटवा चिपिकल अउर,
सूखल बदनवा ।
पड़ते नजर ओकर,
चिहुकल जियरवा ।

www.bhojpurisahityangan.com

काँपल अब डर से आ,
भइल परेशानवा ।
डर मत तू हमरा से,
ना पूछ कवनो बतिया ।
काहे ला बेहाल बारू,
कह साँचे बतिया ।
डर मत तनिको तू,
तू बेटी का समानवा ।
साँचे-साँचे करऽ अब,
आपन तू बेयनवा ।
साँचे-साँचे कहत बानीं,
सुनी मोर बेयानवा ।
बारें परेशान बाबू,
दहेज के कारणवा ।
सास-ससुर होई गइल,
हमरो दुशमनवा ।
मारी-पीटी बाहर कइलें,
दागी के बदनवा ।
इहे सोंची आइल बानीं,
तेजीं अब प्राणवा ।
जी के अब का होई जब,
मिले ना चयनवा ।
लोर पोंछी बाप जस,
बेटी का समानवा ।
चलऽ बेटी चल अब,
चलत बानीं थानवा ।

www.bhojpurisahityangan.com

दूनो जन चली दिहलें,
अन्जानपुर थानवा ।
बाबुओ के बोलाई दिहल,
करेला बेयनवा ।
बाट-बेटी दूनों के जब,
भइलक बेयानवा ।
जागरूक हो गइलें तब,
अन्जानपुर थानवा ।
पहुँचल थाना जबऽ,
ससुर का बथानवा ।
हाथ-गोर छानी के,
थुरलक बदनवा ।
बान्ही के ले गइल थाना,
भेजलक जेहल खानवा ।
पड़ल-रहऽ ओही में अब,
देखी सब जहानवा ।
'गुप्त' कहे एही से अब,
सुनऽ सब जहानवा ।
तूहूँ अब जागऽ भाईं,
जइसे ऊ सज्जनवा ।
बहु के बनाई बेटी,
कोढ़ के भगाईं ।
दहेज रूपी कोढ़ के,
जेहन से हटाईं ।

www.bhojpurisahityangan.com

लगाई लेतीं छतिया

चारो ओरी ठनकत बा,
कारी रे बदरिया ।
चुअत झोपड़िया टपटप,
पुरूवा बेयरिया ।
टूटल खटिया जेपर,
फटही चदरिया ।
लाहे-लाहे चिपकत सखी,
चिपकत बा सड़िया ।
बहत बेयरिया सौतिन,
बुता गइल ढिबरिया ।
कँपसल हियरा मोरा,
कुचकुच अन्हरिया ।
बाटे गदराइल हमरो,
चढ़ल जवनिया ।
रहिया चलत सखी,
मारे सब नजरिया ।
नयका सब छंवड़न के,
बिगड़ल रहनिया ।
अइनीं गवनवा जहिया,
ससुरा पहिला बेरिया ।
छिप-छिप देखे सब,
मारेला नजरिया ।

www.bhojpurisahityangan.com

गाई-गाई गीत कहे,
सुन सुनऽ गोरिया ।
आ जा तनी संगवा में,
चल ना डगरिया ।
कबो कहे भउजी सुनऽ,
आव ना पंजरिया ।
भइया परदेश बारन,
आजा हमरी ओरिया ।
केहू नाहीं दोसर रहे,
घर सुनसावना ।
छाती धड़कत रहे हमरो,
रही अन्जानवा ।
खलत रहे कमी उनकर,
हरदम हमरी जियरा ।
रह-रह इयाद आवे,
बेधत रहे हियरा ।
तड़पत रहे मन मोरा,
साईं बिना रतिया ।
केकरा से कहीं सखी,
मनवा के बतिया ।
मोबाइल से कहनीं सखी,
हियरा के बतिया ।
जवन-जवन जेहन में,
उठत रहे रतिया ।

www.bhojpurisahityangan.com

होत भोर आइल सुनऽ,
मोबाइल से खबरिया ।
तनिको मत सोंचऽ गोरी,
तेज बा सवरिया ।
हरषित भइले मन,
रहबू अब पंजरिया ।
मारेला हिलोर हिया,
भोरे देब खबरिया ।
कालहु के चढ़ल मोर,
अइलन सजनवा ।
बाहर खुशहाली लउकल,
उदास भीतर मनवा ।
डेगवा बढ़ावत मोरा,
फड़कत अंखिया ।
हाथे झोरा कान्हे बेग,
चललन डगरिया ।
लउकल जे रहिया में,
उदासे सब भेंटाइल ।
लउकल उदासे सभे,
भेंटाइल जे रहिया ।
घटना सुनाइल सबऽ,
अपना नगरिया ।
गइले बकबकाते अब,
घरवा का ओरिया ।

www.bhojpurisahityangan.com

खुनवा के धार देखी,
फाटे लागल छतिया ।
नदियन के धार जस,
बहे लागल अँखिया ।
बाटे ना बुझात कुछो,
गिरलें धरतिया ।
फफक-फफक रोए,
सुनऽ मोरा धनिया ।
छोड़ कहाँ गइलू अब,
कहाँ गइल सनेहिया ।
तनिका बतलाव हमके,
कवन कइलक गतिया ।
काँचहीं चबइतीं ओह के,
भूल जइतें रहतिया ।
मन भइल पागल कहलें,
सुन मोर धनिया ।
छोड़ ना नगर चल,
शहर के ओरिया ।
सुखवा में रहबू हरदम,
हमरी पंजरिया ।
उहवाँ ना दुख कवनो,
सटिहें पंजरिया ।
सुनी सभे गंउआ के,
लोग हमर बतिया ।

www.bhojpurisahityangan.com

कवन पापी कइलक अइसन,
धनी के दुर्गतिया ।
बारी पतिव्रता हमरो,
सुनीं सभे धनिया ।
जीअत जो रहती अगर,
लगाई लेतीं छतिया ।
कहे लागल सबऽ,
सुनऽ ना बचनिया ।
नइखी अब दुनिया में,
तोहरो मेहरिया ।
अतने में आई गइल,
थाना से खबरिया ।
पूछे लागल पुलिस सब,
घटना के बतिया ।
लिलरा लिखल रहे,
इहो सब बतिया ।
एही से त होई गइल,
इहो दुर्गगतिया ।
रोवत कानत लाशऽ,
कान्हवा लगवलें ।

www.bhojpurisahityangan.com

लाश उठाई चललें,
शमशान ओरिया ।
चिता जब सजवलक लोग,
लाशवा धराइल ।
हाथ-गोर धो के बबुआ,
देई दिहलन अगिया ।
लह-लह लहके लागल,
गोरी के बदनिया ।
गिरलें थहरा के बबुआ,
चिता का कगरिया ।
'गुप्त' के बतिया मानीं सभे,
छोड़ीं ना गुमनिया ।
रहन सुधारीं आपन,
खतम होई दुनिया ।

www.bhojpurisahityangan.com

मनभावन सावन

मन भावन सावन आइल रे
सखि ! मोहक सावन आइल रे
धीरे-धीरे बदरा छाइल
बहत पूरवा बेयार आइल
गरजत-गरजत बदरा बरसे
अउर मंद-मंद फुहार पड़े
चमचम चमचम बिजुरी चमके
छम-छम छमछम गोरिया नाचे
मोर-मोरनी झूमत नाचे
माल-मवेशी झूम-झूम नाचे
बिन सइयां घर सूना लागे
बीते रतिया जागे-जागे
केतना सुहावन सावन लागे
दिशा-दिशा लुभावन लागे
गुप्त के हिया झूमत गावे
गा के सावन गीत सुनावे
मन भावन सावन आइल रे
सखि मोहक सावन आइल रे !

www.bhojpurisahityangan.com

कहवाँ गइलन-1

वृन्दावन बरसाना पूछे,
पूछे गली-गली मथुरा के ।
कहवाँ गइल प्रेम के जोड़ी,
सखा विप्र सुदामा के ।
वृन्दावन के बाग-बगिया,
पूछे सबही गोप-गोपियाँ ।
कहवाँ गइलन सुन्नर मूरत,
दाऊ आ कनूहइया के ।
सभ ताल तलइया जमुना पूछे,
पूछे नगर के नर-नारी ।
कहवाँ गइलन गोबरधन धारी,
हमनीं के छोड़ प्रेम पुजारी ।
मोर-मोरनी पशु-पक्षी पूछे,
पूछे भर-भर अंखिया में लोर ।
कहवाँ गइलन प्यारे प्राण,
देखत अखियाँ भइल सलोर ।
हे वृन्दा ब्रज बरसानावासी,
जन-जन वासी भारतवासी ।
'गुप्त' करत कर जोड़ तोह से,
आजा एकबार फिर दुनियावासी ।

www.bhojpurisahityangan.com

बाजार

दुनिया के बाजार में,
सउदा गजब-गजब के ।
जेने जाई तेने पाई,
विचार अजब-अजब के ।
चउकी पर विद्वान कहाता,
चउका पर बनल हैवान ।
सूझे ना कबो एकरा,
हटे ई खाँटी शैतान ।
पढ़-लिख के ऊ का कइलख,
जिनगी अपढ़ गँवार के ।
चारो ओर हल्ला भइल बा,
अइसन मूढ़ गँवार के ।
पशुता जइसन भइल विचार,
हपच ली धन दोसरा के ।
आपन त अपने ह भाई,
नोंच ली सब धन दोसरा के ।
'गुप्त' कहे मानऽ मोर बतिया,
नीच करम अब छोड़ के तू ।
असली सउदा कर ल भाई,
दुनिया का बाजार से तू ।

www.bhojpurisahityangan.com

देखते-देखते

कइसन आइल जमाना देखऽ भइया,
देखऽ भइया ।
बेटा बाप के दुश्मन भइल,
देखते-देखते ।
का से का हो गइल देखऽ भइया,
देखऽ भइया ।
भाई-भाई के दुश्मन भइल,
देखते-देखते ।
कइसन आइल जमाना देखऽ भइया,
देखऽ भइया ।
बिगड़ल राँड़, साँड़ संन्यासी,
देखते-देखते ।
का से का हो गइल देखऽ भइया,
देखऽ भइया ।
लड़कियन के ओढ़नी उतरल,
देखते-देखते ।
कइसन आइल जमाना देखऽ भइया,
देखऽ भइया ।

www.bhojpurisahityangan.com

आदमी के जिनगी सस्ता हो गइल,
देखते-देखते ।
कइसन आइल जमाना देखऽ भइया,
देखऽ भइया ।
लोगवा के बोलिया कुबोल हो गइल,
देखते-देखते ।
कइसन बहल पुरवइया देखऽ भइया,
देखऽ भइया ।
आदमी हो गइलन शैतान,
देखते-देखते ।

t

www.bhojpurisahityangan.com

बुरा हो जाई

जेकर नजर दूरंगी भइल मत बूझऽ इन्सान,
अइसने लोग के कहल गइल उहे ह शैतान ।
देखे के गर चाहत बा त दिल से दिल के देख,
उठ-बइठ के सांझ-सबेरे संघत कर के देख ।

बेईमानी कर साधु बनिहें लगिहें खूब महान्,
झूठ बोल कुकर्म छिपइहें कहिहें जय भगवान ।
बाबू होखस भाई होखस चाहे आपन केहू,
बेईमानी से धन छिपइहें कतनो लमहर सेहू ।

बेईमान कहइबे करिहें जय-जय हे भगवान,
चाहे कतनो आगे बढ़स कहइहें ना इन्सान ।
बूझीं बाटे बुद्धि गड़बड़ कोप कइलें भगवान,
लोह-मोह भा छल-कपट कर बन गइलें शैतान ।

भाव के धारा में मत बहऽ बोलऽ सोंच विचार के,
तउलऽ मत तू एके तराजू नीमन आ गँवार के ।
पसंगा मत तू राखऽ केनहूँ तउलऽ एक समान,
का नेक बा का बुरा हो जाई पहचान ।

www.bhojpurisahityangan.com

खाली ऊपर से देखब त परख थोड़े हो जाई,
परख करे के मन होखे त सट के देख भाई ।
इन्सानियत के चश्मा पेन्हऽ हो जाई पहचान,
के बाटे इन्सान जगत में के बाटे बेईमान ।

लइकाइए से देखत बानीं चिन्हतो सब के बानीं,
एही से हम फटक-फटक के बतियो कहते बानीं ।
गुप्त कहे चेतऽ अबहूँ से होइब पानी-पानी,
जइसन करनी वइसन भरनी जय-जय शिव-भवानी ।

नेक कर्म नेके ह भाई नेके नेक हो जाई,
नेक का संगे बुरा जे करी उहे बुरा हो जाई ।
मानऽ 'गुप्त' के बतिया हरदम नेक बुरा ना होला,
बुरा करे के चाही केहू नेक करिहें भोला ।

t

www.bhojpurisahityangan.com

अगुआ फरार

हमार बबुआ हो हमार बबुआ,

लावा घोली में बिका गइल हमार बबुआ

अंगूठी ना मिलल सिकड़ियों ना मिलल,

ना मिलल एको ढेबुआ ।

लावा घोली में बिका गइल हमार बबुआ,

सूट ना मिलल पगड़ियों ना मिलल,

ना मिलल जूता संग मोजवा ।

लावा घोली में बिका गइल हमार बबुआ,

अगुआ फरार भइले उदास भइलें बबुआ,

लोग सब छोड़-छाड़ चल गइलें घरवा,

बेदामे बिका गइल हमार बबुआ ।

t

www.bhojpurisahityangan.com

हाय-हाय

आपन पेट ना भर सके,
दोसरा के का भरी ।
हाय-हाय में पड़ल रही,
हाय-हाय में मरी ।
भाई के जे ना भइल,
का दोसरा के होई ।
भाई के जे हक छीनी,
पाछे जिनगी भर रोई ।
जेकरा समझ ना खुद भइल बा,
का समझाई दोसरा के ।
जेकरा लूर ना बाटे कवनो,
का बतलाई दोसरा के ।
चउकी पर कुछ अउर बताई,
चउका पर कुछ अउर ।
लगावत रही छल-प्रपंच में,
जिनगी भर ऊ दउड़ ।
लमहर पद पा के जे,
अहिंसा पढ़ावत बा ।

www.bhojpurisahityangan.com

अपने खुद हिंसा करत,
अगिला कुल डुबावत बा ।
ऊपर से जे हित बनल,
भीतर तेज कटार ।
काल नेमी बूझऽ ह ऊ,
तू मत बनऽ गंवार ।
'गुप्त' कहे हरदम जग से ई,
चलिह खूब सोंच-विचार ।
भाई-बाप ना भइल आपन त,
कलयुग के देखऽ व्यवहार ।
नेक विचार जे राखी आपन,
जय ओकरे जय हो जाई ।
बुरा विचार भइल अगर त,
बदला में ओकर क्षय हो जाई ।

www.bhojpurisahityangan.com

बदनाम

ओठ बिछका के गाल फुला के,
हरदम तू बइठेलऽ ।
घर परिवार के नाश करेल,
हरदम तू अंइठेलऽ ।
अधेड़ बून में पड़ल रहेल,
काम करेल गड़बड़ ।
आपन बात मनावे खातिर,
बनल बाड़ हड़बड़ ।
हरदम राग अलापऽ एके,
हमरे कहल होई ।
जवन चाहेब उहे करेब,
का करिहे अब कोई ।
बात-बात में बाड़ बेसाहत,
हरदम तू अब टंटा ।
काम सब जब निकल गइल,
देखावत बाड़ घंटा ।
झक मार के बइठल बाड़ऽ,
मनमानी करेलऽ ।
हरमद बोलऽ एके बतिया,
अतने तू जानेलऽ ।
धन उड़ाव बाप के तू,
हरदम हपच-हपच के ।

www.bhojpurisahityangan.com

भाई से बेईमानी कऽ के,
बोलऽ अँड़च-अड़च के ।
जानेल जे बतिया तोहर,
जानत केहू नइखे ।
लंगट उघारे खेलत रहल,
बात बुझाते नइखे ।
दोसरा के बहकावा में सब,
काम आपन बिगड़ल ।
आपन जे रहे सब छूटल,
कवना चक्कर में पड़ल ।
भाई से बेईमानी कइल,
आपन कुल गँवइल ।
बापो के बदनाम तू कइल,
ख्याति सब डुबइल ।
लह लह लह लहकावेल,
कह-कह के कुहुकावेल ।
भाई के हियरा के अब तू,
बुताइल आग जगावेल ।
तू बुझेल दिनवा तोहर,
हरदम इहे रही ।
'गुप्त' कहे से मान ल भाई,
एक दिन महल ढही ।
जय-जय त ओकर होला,
जे ईमान पर रही ।
पहिले दुख जरूरे होला,
बतिया बा ई सही ।

www.bhojpurisahityangan.com

भागऽ मत

जइसे बीज का भीतर बसल,
विशाल गाछ बा जानऽ ।
तइसे प्रभु भीतर में तोहरे,
बाड़न बइठल मानऽ ।
जागऽ अब तू जागऽ खुद,
अपना के पहचानऽ ।
तोहरे भीतर छिपल सब कुछ,
एकरा के तू मानऽ ।
संघर्ष जे कइलख जीवन में,
उहे मंजिल पा गइल ।
जे हाथ पर हाथ रख बइठल,
ऊ पाछे छूट गइल ।
जे दोसरा का कामे आइल,
उहे मानव बन गइल ।
'गुप्त' सुनऽ अबहूँ से तू,
मत करऽ नादानी ।
अपने ला खाली मत जीअ,
इहे ह बेईमानी ।
अपना संग दोसरो ला जीअल,
ओकरे बाटे जय भइल ।
जे दोसरो के हड़प के जीअल,
अन्त में ओकरे क्षय भइल ।

www.bhojpurisahityangan.com

फरमान

चाहे पढ़ल कतनो गीता,
चाहे पढ़ऽ हदीस कुरआन ।
कबहूँ ना तोहरा मुक्ति मिली,
जब तक ना करब दीन-कल्याण ।
बा परम सत्य ई बतिया जान,
कर लऽ चाहे कतनो तकरार ।
जब तक ना करब दीनन-सेवा,
कबो ना खुली मुक्तिद्वार ।
मुक्ति द्वार खुलेला दानी ला,
एह से कर ल जिनगी में दान ।
दान से बढ़ के ना कोई सेवा,
ना सेवा से लमहर दान ।
दान करे बा गर तोहरा,
मत कर दान मुल्ला-पंडित के ।
देहे के बा अगर तोहरा,
कर तू दान केवल गिरल के ।
हाथ-पैर बा जेकर नीमन,
मत करऽ ओकरा के दान ।
अखियाँ नइखे भाई जेकरा,
पंगु के अब तू करऽ दान ।
भरला के का भरबऽ पेट,
भरऽ पेट बेबस लाचार के ।
इहे बतावे वेद-कुरआन,
जौहर के बा इहे फरमान ।

www.bhojpurisahityangan.com

खूबसूरत संज्ञा

केतना तारिफ करीं जौहर के,
अलख जगवलक जे भोजपुरी के ।
छोट-छोट बन्ध के बन्ध खोल,
जे दूर दृष्टि के अपनवलक ।

सोंचे जे हरदम दीन-दुखी ला,
रखे जे हरदम लमहर विचार ।
का करीं बड़ाई ओह जौहर के,
जेकरा नइखे दिल में विकार ।

ह संज्ञा जौहर मर्दानगी के,
आ ह साहसिक संज्ञा जौहर के ।
संदेशवाहक तमाम धरम के,
आ पोषक जौहर सच्चाई के ।

लमहर आ छोट सबसे से नाता,
वेद-कुरआन आ हदीस गीता ।
समाइल बा जेकरा हियरा में,
ह खुबसूरत संज्ञा जौहर के ।

'गुप्त' करऽ अनुसरण जौहर के,
काहे जौहर नाम ह जौहरी के ।
जौहर बूझे से ही जौहरी,
सोंच समझ जौहर के ।

www.bhojpurisahityangan.com

कहवाँ गइलन - 2

गइलन कहाँ शूरसारथि तिलक,
पृष्ठभूमि आजादी के ।
कहवाँ गइलन लाला लाजपत,
दिवाना जे आजादी के ।
शहीदे आजम कहवाँ चल गइलन,
आ कहवाँ गइलन सुखदेव ?
जे हत्याकर साण्डर्स के,
जे लाजपत के बदला लेव ।
तनी बताईं कहवाँ गइलन,
जेकरा राज में सभे समान ?
सर्वधर्म के आदर कऽ के,
कहवाँ गइलन अकबर महान् ?
कहवाँ भुलाइल हेमू समसीर,
खन-खन करत जे गरजत बोले ?
छोड़ के भागऽ अब अंगरेज,
ललकारत अब भारत बोले ।
कहाँ गइल नूर नूरजहाँ के,
जे प्रकाशित कइली देश ?
कहवाँ गइलन वीर आशफाक,
देश ला तजलन निज तन शेष ।
कहवाँ गइलन वीर सुभाष,
झकझोर सिंहासन अंगरेजन के ।
रख के तख्तो ताज किनारे,
भगवलन देश से अंगरेजन के ।

www.bhojpurisahityangan.com

कहवाँ गइलन राजीन्दर बाबू,
जे सादगी के रहस अवतार ।
छोड़लन ना कबहूँ भोजपुरी,
ना छोड़लन गँवई व्यवहार ।
कवन दिशा हो गइली गुम,
काल कराली रजिया सुल्लतान ?
मातृभूमि के रक्षा खातिर,
लड़ते-लड़ते देहली जान ।
करे विनति कर जोड़ गुप्त,
बताईं मईया देशवा के ।
कहवाँ गइलन टीपू सुलतान,
पूछे हर बचवा देशवा के ।
बागी चन्द्रशेखर कहवाँ गइलन,
दाग गोली निज मस्तक में ।
गिरत-चूअत खूनवा के ऊ,
चढ़वलन माई के दस्तक में ।
कहवाँ गइली झाँसी के रानी,
जेकर खन-खन करे तलवार ?
जबतक रहे दम में दम,
ना मनली कबो ऊ हार ।
कहवाँ गइलन वीर सिपाही,
मदनलाल ढींगरा देशवा के ।
विलियन हट कर्जन के मार के गोली,
बदला लेलन देशवा के ।

www.bhojpurisahityangan.com

कहलन गर्व बा हमरा खुद पर,
जान गँववनीं मातृभूमि ला ।
देखत-देखत झूल गइनीं,
चिन्ता ना कइनीं अपना ला ।
कहवाँ गइलन प्रतिभा के धनी,
जे रहलन समर्थक अछूतन के ।
कहवाँ गइलन बाबा अम्बेदकर,
उद्धार जे कइलन गरीबन के ।
छूआ-छूत से आजीज होके,
आ मनुवादी परम्परा से ।
दुखित-पीड़ित हो बौद्ध हो गइलन,
जान छोड़इलन लफरा से ।
प्रकाश बन के जे प्रकट भइल,
ऊ जयप्रकाश कहवाँ गइलन ?
आ क्रान्ति बिगुल बजावेवाला,
धीर-वीर कहवाँ गइलन ?
लिखत समइया लोरवा टपकल,
भइल उदास हमरो मनवा ।
छोड़ कलम सोंचे तब लगनीं,
ऊ सब रहे महानवा ।

t

क्रमशः दुसर किताब में

www.bhojpurisahityangan.com

हऽ ई देश महान् हमार

कल-कल, छल-छल हमेशा बहे,
जहवाँ गंगा-जमुना के धार ।
कुहू-कुहू करत कोइलिया जहवाँ,
हऽ ई देश महान् हमार ।

जहाँ राधा-कृष्ण प्रेमफूल महके,
गूंजत सुरसती के वीणा के तार ।
गूंजल वाणी ठाकुर के जहवाँ,
जहाँ भइल गौतम बुद्ध अवतार ।
हऽ ई देश महान् हमार ।

चन्द्रगुप्त-चाणक्य जहवाँ भइलन,
कइलन अखण्ड भारत निर्माण ।
नाश क के नन्दवंश के पूरा,
करवलन दूर तब सब अत्याचार ।
हऽ ई देश महान् हमार ।

साँच अबध, सेवा-दया-माया के,
जे संदेश दिहली दुनिया के ।
खूबसूरत धरती मदर टेरेसा,
जेकर जयकार कइलक संसार ।
हऽ ई देश महान् हमार ।

www.bhojpurisahityangan.com

आकाश चूमे जहाँ हिमालय,
कुंकुम फूलन से महकत धरती ।
जहाँ भइलन पहरेदार हिमालय,
भरे जहाँ हिन्दसागर हुंकार ।
हऽ ई देश महान् हमार ।

दधीचि जइसन त्यागी जहवाँ,
हरिश्चन्द्र जस सत्यवादी महान् ।
अति पवितर धरती जहवाँ के,
राम-कृष्ण लिहलन प्रभु अवतार ।
'गुप्त' ई देश महान् हमार ।

www.bhojpurisahityangan.com

"कहिया भइल बिहान" पर एक नजर

- शुभ नारायण सिंह 'शुभ'

आज हमरा हाथ में लइकाई के साथी भाई राजेन्द्रगुप्त जी के लिखल 'कहिया भइल बिहान' किताब के पाण्डुलिपि बा। पढ़ के मन-मिजाज खुश हो गइल। अनुभव पर आधारित ई किताब अपने आप में एगो धरोहर बा। एक-एक कऽ के सब कविता पढ़ गइनीं। एमें कुछ कविता त हमरा अतना नीक बुझाइल कि हम का कहीं। 'बाजार' कविता पढ़नीं त मन गद्‌गद्‌ हो गइल। आज का विद्वान लोग पर करारी चोट करत भाई 'गुप्त' जी लिखले बाड़न-

चउकी पर विद्वान कहाता,
चउका पर बनल हैवान ।
सूझे ना कबो एकरा,
हटे ई खाँटी शैतान ।

अतने ना एगो कविता "नापऽ मत एके तराजू" बा जवन देखावटी सन्त भा विद्वान के भी बखिया उधेड़ देले बाड़न। उनकर कहनाम बा कि आज के तथाकथित विद्वान आपन गुण अपने गावे में हरान बा आ दोसरा के हीन भाव से देखत बा। एह से कवि के ई कहनाम बा कि केहू का बारे में बिना गहराई से जनले जे अँगुरी उठावेला ऊ भले कागजी विद्वान् काहे ना होखे मुरख ह। कुछ लोग अइसनो कवि भा लेखक बा जे दोसरा के लिखल लेख भा कविता के अपना से छपवा ख्याति प्राप्त कइलक आ लोग के भरमा दिलहक जवना के भाव गोरखधंधा कविता में स्पष्ट बा। कवि मानव का प्रति सचेत बाड़न आ स्पष्ट रूप से ई कह रहल बाड़न कि मानवता से लमहर कवनो संविधान ना होला। कवि के इहो कहनाम बा कि अतीत के कबो

www.bhojpurisahityangan.com

ना भुले के चाहीं। एगो दृष्टान्त बा-'एक बेरा एगो गरीब आदमी केहू राजा का लगे नोकरी खातिर पहुँचल। ऊ काफी ईमानदार रहे। राजा रख लेलन। फाटल-चीटल कपड़ा उतड़वा के अच्छा कपड़ा बनवा देलन। ऊ गरीब आदमी एगो कमरा में रहे लागल। कमरा में एगो सन्दूक रहे। आपन पुरान कपड़ा ओही में रख देलक। एक बेरा रोज ओह कपड़ा के जरूर देखे आ अपना अतीत के इयाद करे। काफी ओकर इज्जत होखे, बाकी नोकर-चाकर का डाह होखे लागल। राजा का लगे शिकायत गइल कि ई आदमी धन चोरा के सन्दूक में रखले बा। राजा पर सन्दूक में का बा, देखे ला दबाव पड़े लागल। एक दिन राजा ढुका लाग के देखत रहस। जइसे ऊ आदमी सन्दूक खोललक राजा कमरा खोलववलन आ सन्दूक खोले के कहलन। नोकर कहलस कि मालिक! एमें का देखेब? राजा के संदेह बढ़ गइल। जबरदस्ती सन्दूक खोलवा दिहलन। पुरान फाटल-चीटल मइल कुचइल कपड़ा देख के पूछ दिहलन कि ई सब काहे खातिर रखले बाड़S। ऊ कहलस-'मालिक! हम रोज अपना अतीत के इयाद करिले। हम कवना स्थिति में रहीं आ आज कवना स्थिति में बानीं।" राजा के श्रद्धा बढ़ गइल आ नोकर के अउर महीना बढ़ा दिहलन। एह से कबो अतीत के ना भुलाए के चाहीं। जे अतीत के भुला जाला ओकरे में कृतध्नता आ जाला आ ओकरे कृतघ्न कहल जाला।

कवि के एगो इहो कविता देखल जा सकत बा जवना के मथेला बा ज्ञान-अँजोर-

जेकरा ला तू चोरी करब,
उहे कही चोर ।
जनम-जनम तू कुहुकत रहब,
दिन रात भा भोर ।

www.bhojpurisahityangan.com

कहे के मतलब ई बा कि केहू भी आदमी अपना बाल-बच्चा ला अगर चोरी, बेईमानी कऽ के धन जोगावत बा। ऊ अपना बाल-बच्चा के संस्कार बनावत नइखे बलुक बिगाड़त बा। बारीकी के बात त ई बा कि आज के बेईमान सब सही आदमी के बेईमान कहत बा एही से कवि अन्त में ई संदेश देले बाड़न-

गुरू विवेका रामकृष्ण से,
ले ल ज्ञान अँजोर ।

मतलब अपना के पहचानऽ आ दुनिया से बेईमान कहा के मत जा। दहेज रूपी कोढ़ पर भी कवि के करारी चोट बा। दहेज खातिर पीड़ित महिला के बखान करत भाई 'गुप्त' जी 'दहेज रूपी कोढ़' कविता में जवन वर्णन कइले बाड़न ओकर चार पाँति देखल जा सकत बा-

सास-ससुर होई गइलन,
हमरो दुशमनवा ।
मारी-मारी बाहर कइलन,
दागी के बदनवा ।

देशभक्ति खातिर अमर शहीदन पर भी कवि आपन कलम तुड़ देले बाड़न। कवि एह कविता का शुरूआते में आपन कलाकारी देखावत कहले बाड़न-

गइलन कहवाँ शूरसारथि तिलक,
पृष्ठभूमि आजादी के ।
कहवाँ गइलन लाला लाजपत,
दिवाना जे आजादी के ।

www.bhojpurisahityangan.com

ठीक अइसहीं 'कन्यादान' कविता 'बेटी के महत्व बढ़ा रहल बा' जवना मे कन्यादान करे वाला बाप के भाग्यशाली बतावत कवि बेटी का महानता पर मुहर लगवले बाड़न। एहू कविता के कुछ पाँति देखल जा सकत बा।

भाग्यशाली बाप उहे ह,
जे करे कन्या के दान ।
ऊ भाग्यशाली ना ह भाई,
जेकरा ला बा धन महान् ।
पवितर घर उहे होला,
जेकरा में माड़वा छवाय ।
बिना माड़वा के दान ना होला,
ऊ बेटी लक्ष्मी कहलाय ।
सब दान से लमहर बूझीं,
जवन कन्यादान कहलाय ।
कन्यादान जे करेला बाबू,
अश्वमेघ के फल पाय ।

एह ढंग से हम देखत बानीं कि कवि के एक-एक कविता काफी सराहनीय आ अनुभव पर आधारित बा। ई कविता समसामयिक बा। एकरा खातिर कवि के कोटि-कोटि बधाई देत ईश्वर से प्रार्थना बा कि इनका के लम्बा आयु देस। इनकर रचना लेख भा कविता का रूप में होत रहो आ भोजपुरी के भण्डार भरत रहो।

जय भोजपुरी
अवकाश प्राप्त शिक्षक
ग्राम-चरिहारा, मशरक, सारण

www.bhojpurisahityangan.com

'कहिया भइल बिहान' समीक्षा का नजर में

- आचार्य प्रेमचन्द

'कहिया भइल बिहान' यशस्वी कवि श्री राजेन्द्रगुप्त जी का कलम के कमाल से भरल-पूरल भांति-भांति के समयक् संकल्प से जुड़ल फूलन के एगो गुलदस्ता बा, जवना में नीतिगत आ वैचारिक ऊर्जा के कई प्रकार के अनुभूतिपरक तथ्य-कथ्य के बनाव सिंगार मुखर बा, जवन भोजपुरी भाषा के सहजता-सरलता आ भाषिक सरसता के परिचायक बा। एह सब रचनन के पढ़ला का बाद हमरा बड़ा खुशी भइल कि 'गुप्त' जी अपना काव्य करमो में शिक्षक के भूमिका में बानीं। भाषा-भाव आ शैली सब सामान्य प्रचलित परम्परा पर आधारित बा। तबो गंगा के बहाव मे रूकावट बन के ईंटा-पत्थर झाड़-झांखर का अइला से गंगा का पवित्रता के कवनो फर्क ना पड़े। ई साँच सदा रहल बा आ रही।

अंत में यशस्वी कवि के वैचारिक ऊर्जा के नमन आशीर्वाद से सजावत अश्लीलता के बाजारबादी माहौल में अपना मातृभाषा के मान-सम्मान बढ़ावे खातिर भोजपुरी में चान-सुरूज परोसेवाला के हमार नमन शत्-शत् नमन बा।

'कहिया भइल बिहान' समीक्षा का नजर में

- विमलेश झा 'विमल'

'जहाँ न जाय रवि वहाँ जाय कवि' उक्ति अति प्राचीन एवं नैसर्गिक है। कवि कल्पना रूपी उस सागर में गोता लगाता रहता है, जिसे ऋषि-महर्षियों ने 'रत्नाकर' अन्वर्थक संज्ञा दी है। साहित्य में अनेक विधाएँ हैं। साहित्य शब्द की व्युत्पत्ति है 'सहितयोः भावः साहित्यम्' अथवा हितेन सह इति सहितम्। 'सहितयोः अर्थात् शब्दार्थयोः भावः साहित्यम्। शब्द एवं अर्थ-इन दोनों का भाव साहित्य कहलाता है। अर्थ

www.bhojpurisahityangan.com

भाववाचक होता है। बाहर से दिखता नहीं है बल्कि अन्तर्मन से अनुभव होता है। कवि की कविता भाव प्रधान होती है। इसी परिपेक्ष्य में कवि राजेन्द्रगुप्त जी की कविता संग्रह रचना 'कहिया भइल बिहान' अनेक बार पढ़ने-सुनने एवं आत्मविभोर होने का अवसर मुझे मिला। श्री गुप्त जी की अनेक रचनाएँ हैं जिनमें से कुछ रचना समूह प्रकाशित आप के हाथों में हैं। इस पद्य-विधा में लेखक की हृदयगत भावना सराहनीय है।

कवि के अनुभव के समरूप अभिव्यक्ति रचना ही सर्वजन मान्यता प्राप्त करती है। सस्नेही श्री गुप्त जी से समाज की अपेक्षा है। ये रचना कार्य में निरन्तर प्रयासरत रहें ताकि समाज को नई दिशा एवं सोंच मिलती रहे।

श्री गुप्त के श्रीमुख से सस्वर गाते हुए इन गेयात्मक काव्य को सुनकर मैं अघाता नहीं था। उनकी कविता की एक बानगी देखिए-

कदम से कदम ना मिला के चलीं,
गीत जिनगी के अब गुनगुना के चलीं ।
कदम से कदम ना मिला के चलीं ।

अन्ततः मैं यह कहना चाहूँगा कि भोजपुरी माटी में उपजे कपास से रची यह रचना सुवासिता, सुपाठिता, सुज्ज्वला बनी रहेगी।

ग्राम+पो०-पटसा, थाना-कुण्डल, जिला-समस्तीपुर
वर्त्तमान पता :-
श्री अवध उच्च विद्यालय चैनपुर चरिहारा,
मशरक सारण में सहायक शिक्षक
आचार्य एवं दर्शनशास्त्र से एम० ए०

www.bhojpurisahityangan.com

'कहिया भइल बिहान' हमरा नजर में

- निरसूनारायण सिंह

भोजपुरी कवि भाई राजेन्द्रगुप्त जी के लिखल 'कहिया भइल बिहान' किताब पढ़ला से हमार मन-मिजाज गद्‌गद्‌ हो गइल। माई पर लिखल कविता पढ़ के हम आत्मविभोर हो गइनीं। कुछ देर तक हम माई का इयाद में गोता लगावे लगनीं। माई केतना दुख दर्द सह के बेटा के जन्म देवेली भा पालन-पोषण करेली। देखीं कवि के एगो बानगी-

नौ महिना गरभ में राखे,
पीड़ा दर पीड़ा सहेली ।
बड़ा भइलो पर बबुआ के,
तनिको ना बोलेली ।
भूखल पिआसल रह के खुद,
सेवा निःस्वार्थ करेली ।
ठंढी से ठिठुरत बचवन के,
छतिया से धरेली ।

ठीक एही ढंग से भाई शुभ नारायण सिंह 'शुभ' जी के अपना किताब 'भोजपुरी रचना संसार' में एगो कविता बा जवना के मथेला ह चार के गुण। एह कविता में लिखत बाड़न-

ममता त माई का होला,
पूत चाहे भइल गँवार ।
पूत सब होला एक बरोबर,
सबका लागि एके प्यार ।
बबुआ ला भीख मांगत रहिहें,
अँचरा आपन दिहें पसार ।

www.bhojpurisahityangan.com

देवता-पितर सब गोहरइहें,
नीके बबुआ रहस हमार ।

अतने ना एही किताब का कविता 'कहवाँ गइलू' में कवि के भावना के उनहीं का शब्द में देखल जा सकत बा-

माई छोड़ कहवाँ तू गइलू,
हमरा के टूअर कइलू ।
बाकी लोग विराना भइल,
हमरा के विसरइलू ।
जनम-जनम के हमर तोहर,
नेहिया बाटे लागल ।
तबहीं बबुआ बबुआ कह के,
प्राण पखेरू भागल ।

एह कविता में तरजूई का एगो पलड़ा में माई आ दोसरा पलड़ा में पूरा संसार के राख के माई का पलड़ा के भारी बतवले बाड़न, तबहीं उनकर कथन बा 'हमरा के टूअर कइलू'। एह ढंग से भाई 'शुभ' जी माई के भगवान का समतुल्य कर देले बाड़न। कविता पढ़ के हमरा आँख से आँसू के बरसात होखे लागल आ हमरा ऊ दिन इयाद पड़ गइल जवन एगो नाटक में हमरा के अइसन पाठ दिहल गइल रहे आ जवना में हमरा मर जाये वाला दृश्य देखावे के रहे। ई बात सुनली आ दउड़ल मंच पर चल गइली कि हमरा बबुआ के मत मुआवऽ लोगन। ई ह माई के ममता।

अइसन ममतामई माई के भुला के लोग तरह-तरह का काम में लाग गइल बा। भाई 'शुभ' जी अपना किताब 'शुभ-दर्पण' में कविता 'माई के जीव' में लिखलहूँ बाड़न-

www.bhojpurisahityangan.com

माई के जीव गाई लेखा,
पुत के जीव कसाई ।
जइसन करम करी केहू,
उहे ओकरा आगे आई ।

अइसन किताबन का पाठ्यक्रम में होखे के चाहीं तबे समाज में प्रेम के माहौल बन सकत बा आ माई-बेटा के प्यार अटूट हो सकत बा। आज के लोग मोबाइले में मस्त बा। पठन-पाठन से मतलब नइखे राखत। आजादी का मिलला का 72 साल बितला का बादो भोजपुरी के आठवीं अनुसूची में शामिल ना कइल गइल, जवन दुख के बात बा। भोजपुरी के लेखक भा कवि लोग भोजपुरी माटी के धरोहर बा आ ओह लोग के रचना अपना माई-भाषा के धरोहर।

अन्त में हमार ई मनसा बा कि केहू भोजपुरी के लेखक भा कवि एकर शब्दकोष बनाइत। एही बात का संगे भाई 'गुप्त' जी के नमन करत ईश्वर से प्रार्थना करत बानीं कि इनकर आयु लंबा होखो, कलम चलत रहो, आ भंडार भरत रहों।

जय भोजपुरी

अवकाश प्राप्त शिक्षक
राजपूत इण्टर कॉलेज, छपरा
मो०-9931938089

www.bhojpurisahityangan.com

कवि-परिचय

नाम : राजेन्द्र प्रसाद गुप्त
(अवकाश प्राप्त शिक्षक)

उपनाम : राजेन्द्रगुप्त

जन्म तिथि : 03 जनवरी 1953 ई० ।

शिक्षा : बी० ए० (बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर)
बी० टी० प्राथमिक शिक्षक शिक्षा महाविद्यालय फतुहा (बिहार शरीफ पटना)

माता : स्व० लाखपति देवी

पिता : स्व० साधुशरण प्रसाद

पत्नी : स्व० श्रीमती देवी

पुत्र : (1) गोविन्द कुमार 'राहुल'
कम्प्यूटर इंजीनियर
(2) अनुराग कुमार (प्रत्यूष पुष्कल गुप्त)
स्नातक मैथ ऑनर्स एवं टी० ई० टी० एवं सी० टेट० पास ।

पुत्री : (1) श्रीमती निधि कुमारी (शिक्षिका)
(2) श्रीमती आरती कुमारी
स्नातक भोजपुरी ऑनर्स एवं प्रभाकर पास ।

सम्मान :-सेवा निवृत्त कर्मचारी एवं पेन्सनर्स एसोसिएशन उत्तर प्रदेश द्वारा उत्कृष्ट साहित्य रचना धर्मिता हेतु सारस्वत सम्मान प्राप्त वर्ष 2015।

स्थाई पता :- ग्राम-चरिहारा, पो०-मशरक, थाना-मशरक, जिला-सारण बिहार, पिन कोड-841417

मो०- 9155171230

www.bhojpurisahityangan.com

www.bhojpurisahityangan.com

नाम : राजेन्द्र प्रसाद गुप्त
(अवकाश प्राप्त शिक्षक)

उपनाम : राजेन्द्रगुप्त

जन्म तिथि : 03 जनवरी 1953 ई० ।

शिक्षा : बी० ए० (बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर)
बी० टी० प्राथमिक शिक्षक शिक्षा महाविद्यालय फतुहा (बिहार शरीफ पटना)

माता : स्व० लाखपति देवी

पिता : स्व० साधुशरण प्रसाद

पत्नी : स्व० श्रीमती देवी

पुत्र : (1) गोविन्द कुमार 'राहुल'
कम्प्यूटर इंजीनियर
(2) अनुराग कुमार (प्रत्यूष पुष्कल गुप्त)
स्नातक मैथ ऑनर्स एवं टी० ई० टी० एवं सी० टेट० पास ।

पुत्री : (1) श्रीमती निधि कुमारी (शिक्षिका)
(2) श्रीमती आरती कुमारी
स्नातक भोजपुरी ऑनर्स एवं प्रभाकर पास ।

सम्मान :-सेवा निवृत्त कर्मचारी एवं पेन्सनर्स एसोसिएशन उत्तर प्रदेश द्वारा उत्कृष्ट साहित्य रचना धर्मिता हेतु सारस्वत सम्मान प्राप्त वर्ष 2015।

स्थाई पता :- ग्राम-चरिहारा, पो०-मशरक, थाना-मशरक, जिला-सारण बिहार, पिन कोड-841417

मो०- 9155171230

शिवालिक प्रकाशन

4648/21, GF , Ansari Road , Daryaganj
New Delhi -110002
Ph./Fax : 011-42351161
E-mail: shivalikprakashan@gmail.com
Website: www.shivalikprakashan.in
facebook/shivalikprakashan/

₹ 295

9 788193 826393